जनवरी 2025

भारतीय संविधान
गणतंत्र के 75 वर्ष

मन की बात
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 **प्रधानमंत्री का सन्देश** 1

02 **मुख्य आलेख**

2.1 **भारतीय संविधान की महिला शिल्पकार** 16

2.2 **मतदान में समावेशिता :** सभी के लिए प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के प्रयास 28

2.3 **नदियों से जुड़ता अध्यात्म और लोग** 34

2.4 **स्टार्टअप इंडिया :** बदलते उद्यमशील परिदृश्य के 9 वर्ष 50

2.5 **नेताजी सुभाष चंद्र बोस :** औपनिवेशिक शासन के खिलाफ मुखर आवाज़ 58

03 **संक्षेप में**

3.1 **गणतंत्र दिवस 2025** 24

3.2 **भारतीय संविधान में कैलीग्राफी कला** 26

3.3 **भारत में मतदान प्रक्रिया का विकास** 32

3.4 **दिव्य नदियों के किनारे आयोजित होने वाले त्योहार** 38

3.5 **अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की छलाँग** 44

3.6 **भारत के टाइगर रिज़र्व :** वन्यजीव संरक्षण की मिसाल 46

3.7 **प्रकृति और प्रगति का संगम :** असम के हाथी और निकोबार के नारियल बने बदलाव के प्रतीक 48

3.8 **सशक्त यूनिकॉर्न :** भारत में क्रांति 56

3.9 **करुणा की प्रतिध्वनि :** बदलते भारत के अनसुने नायकों की सराहना 62

04 **लेख/साक्षात्कार**

4.1 **भारतीय संविधान का निर्माण, विरासत और प्रभाव** – ए. सूर्य प्रकाश 20

4.2 **अंतरिक्ष में उपग्रह डॉकिंग और पौधे उगाना : भारत की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि** –डॉ. वी. नारायणन 40

4.3 **स्टार्ट-अप इंडिया के 9 वर्ष : छोटे शहरों का सशक्तीकरण और साहसिक मंसूबे** –निखिल कामथ 53

05 **प्रतिक्रियाएँ** 64

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

आज 2025 की पहली 'मन की बात' हो रही है। आप लोगों ने एक बात जरूर notice की होगी, हर बार 'मन की बात' महीने के आखिरी रविवार को होती है, लेकिन इस बार हम एक सप्ताह पहले चौथे रविवार की बजाय तीसरे रविवार को ही मिल रहे हैं, क्योंकि अगले सप्ताह, रविवार के दिन ही गणतंत्र दिवस है। मैं सभी देशवासियो को गणतंत्र दिवस की अग्रिम शुभकामनाएँ देता हूँ।

साथियो, इस बार का गणतंत्र दिवस बहुत विशेष है। ये भारतीय गणतंत्र की 75वीं वर्षगाँठ है। इस वर्ष संविधान लागू होने के 75 साल हो रहे हैं। मैं संविधान सभा के उन सभी महान व्यक्तित्वों को नमन करता हूँ, जिन्होंने हमें हमारा पवित्र संविधान दिया। संविधान सभा के दौरान अनेक विषयों पर लम्बी-लम्बी चर्चाएँ हुईं। वो चर्चाएँ संविधान सभा के सदस्यों के विचार, उनकी वो वाणी हमारी

बहुत बड़ी धरोहर है। आज 'मन की बात' में मेरा प्रयास है कि आपको कुछ महान नेताओं की original आवाज़ सुनाऊँ।

साथियो, जब संविधान सभा ने अपना काम शुरू किया, तो बाबा साहब आम्बेडकर ने परस्पर सहयोग को लेकर एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही थी। उनका ये सम्बोधन English में है, मैं उसका एक अंश आपको सुनाता हूँ –

"So far as the ultimate goal is concerned, I think none of us need have any apprehensions. None of us need have any doubt, but my fear which I must express clearly is this, our difficulty as I said is not about the ultimate future. Our difficulty is how to make the heterogeneous mass that we have today, take a decision in common and march in a cooperative way on that road which is bound to lead us to unity. Our difficulty is not with regard to the ultimate; our difficulty is with regard to the beginning."

डॉ. बी.आर. आम्बेडकर

(14 अप्रैल, 1891 - 6 दिसम्बर, 1956)

- फ्रेंच, जर्मन, पाली और फ़ारसी सहित 9 भाषाएँ जानते थे।
- स्वतंत्र भारत के पहले विधि एवं न्याय मंत्री।
- सामाजिक बाधाओं के बावजूद यू.एस. और यू.के. में उच्च शिक्षा प्राप्त की।

साथियो, बाबा साहब इस बात पर जोर दे रहे थे कि संविधान सभा एक साथ, एक मत हो और मिलकर सर्वहित के लिए काम करे। मैं आपको संविधान सभा की एक और audio clip सुनाता हूँ। ये audio डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी का है, जो हमारी संविधान सभा के प्रमुख थे। आइए डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी को सुनते हैं -

"हमारा इतिहास बताता है और हमारी संस्कृति सिखाती है कि हम शांति प्रिय हैं और रहे हैं। हमारा साम्राज्य और हमारी फतह दूसरी तरह की रही है, हमने दूसरों को जंजीरों से, चाहे वो लोहे की हों या सोने की, कभी नहीं बाँधने की कोशिश की है। हमने दूसरों को अपने साथ लोहे की जंजीर से भी ज्यादा मज़बूत मगर सुंदर और सुखद रेशम के धागे से बाँध रखा है और वो बंधन धर्म का है, संस्कृति का है, ज्ञान का है। हम अब भी उसी रास्ते पर चलते रहेंगे और हमारी एक ही इच्छा और अभिलाषा है, वो अभिलाषा ये है कि हम संसार में सुख और शांति कायम करने में मदद पहुँचा सकें और संसार के हाथों में सत्य और अहिंसा, वो अचूक हथियार दे सकें जिसने हमें आज आज़ादी तक पहुँचाया है। हमारी ज़िंदगी और संस्कृति में कुछ ऐसा है जिसने हमें समय के थपेड़ों के बावजूद जिंदा रहने की शक्ति दी है। अगर हम अपने आदर्शों को सामने रखे रहेंगे तो हम संसार की बड़ी सेवा कर पाएँगे।"

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(3 दिसम्बर, 1884 - 28 फरवरी, 1963)

- भारत के प्रथम राष्ट्रपति (1950-1962)
- बिहारी छात्र सम्मेलन की स्थापना (1906)
- सादगी और सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण के लिए विख्यात

साथियो, डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी ने मानवीय मूल्यों के प्रति देश की प्रतिबद्धता की बात कही थी। अब मैं आपको डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की आवाज़ सुनाता हूँ। उन्होंने अवसरों की समानता का विषय उठाया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था -

"I hope sir that we shall go ahead with our work in spite of all difficulties and thereby help to create that great India which will be the motherland of not this community or that, not this class or that, but of every person, man, woman and child inhabiting

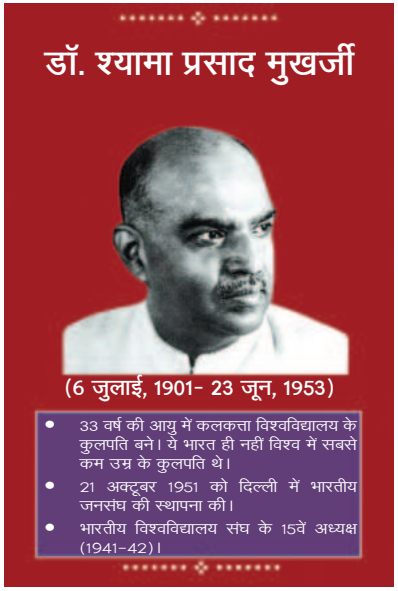

in this great land irrespective of race, caste, creed or community. Everyone will have an equal opportunity, so that he or she can develop himself or herself according to best talent and serve the great common motherland of India."

साथियो, मुझे उम्मीद है, आपको भी संविधान सभा की debate से ये original audio सुनकर अच्छा लगा होगा। **हम देशवासी को, इन विचारों से प्रेरणा लेकर ऐसे भारत के निर्माण के लिए काम करना है, जिस पर हमारे संविधान निर्माताओं को भी गर्व हो।**

साथियो, 'गणतंत्र दिवस' से एक दिन पहले 25 जनवरी को national voters' day है। ये दिन इसलिए अहम है, क्योंकि इस दिन 'भारतीय निर्वाचन आयोग' की स्थापना हुई थी.. Election Commission. हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान में हमारे चुनाव आयोग को लोकतंत्र में लोगों की भागीदारी को बहुत बड़ा स्थान दिया है। देश में जब 1951-52 में पहली बार चुनाव हुए, तो कुछ लोगों को संशय था कि क्या देश का लोकतंत्र जीवित रहेगा, लेकिन हमारे लोकतंत्र ने सारी आशंकाओं को गलत साबित किया, आखिर भारत, Mother of Democracy है। बीते दशकों में भी देश का लोकतंत्र सशक्त हुआ है,

समृद्ध हुआ है। मैं चुनाव आयोग का भी धन्यवाद दूँगा, जिसने समय-समय पर, हमारी मतदान प्रक्रिया को आधुनिक बनाया है, मज़बूत किया है। आयोग ने जन-शक्ति को और शक्ति देने के लिए, तकनीक की शक्ति का उपयोग किया। मैं चुनाव आयोग को निष्पक्ष चुनाव के उनके commitment के लिए बधाई देता हूँ। **मैं देशवासियों से कहूँगा कि वो ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में अपने मत के अधिकार का उपयोग करें, हमेशा करें और देश के Democratic Process का हिस्सा भी बनें और इस Process को सशक्त भी करें।**

मेरे प्यारे देशवासियो, प्रयागराज में महाकुम्भ का श्रीगणेश हो चुका है। चिरस्मरणीय जन-सैलाब, अकल्पनीय दृश्य और समता-समरसता का असाधारण संगम! इस बार कुम्भ में कई दिव्य योग भी बन रहे हैं। **कुम्भ का ये उत्सव विविधता में एकता का उत्सव मनाता है। संगम की रेती पर पूरे भारत के, पूरे विश्व के लोग जुटते हैं। हजारों वर्षों से चली आ रही इस परम्परा में कहीं भी कोई भेदभाव नहीं, जातिवाद नहीं।** इसमें भारत के दक्षिण से लोग आते हैं, भारत के पूर्व और पश्चिम से लोग आते हैं। कुम्भ में गरीब-अमीर सब एक हो जाते हैं। सब लोग संगम में डुबकी लगाते हैं, एक साथ भंडारों में भोजन करते हैं, प्रसाद लेते हैं - तभी तो 'कुम्भ' एकता का महाकुम्भ है। कुम्भ का आयोजन हमें ये भी बताता है कि कैसे हमारी परम्पराएँ पूरे भारत को एक सूत्र में बाँधती हैं। उत्तर से दक्षिण तक मान्यताओं को मानने के तरीके एक जैसे ही हैं। **एक तरफ प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और**

हरिद्वार में कुम्भ का आयोजन होता है, वैसे ही, दक्षिण भू-भाग में गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा और कावेरी नदी के तटों पर पुष्करम होते हैं। ये दोनों ही पर्व हमारी पवित्र नदियों से, उनकी मान्यताओं से जुड़े हुए हैं। इसी तरह कुम्भकोणम से तिरुक्कड-यूर, कूड़-वासल से तिरुचेरई, अनेक ऐसे मंदिर हैं जिनकी परम्पराएँ कुम्भ से जुड़ी हुई हैं।

साथियो, इस बार आप सब ने देखा होगा कि कुम्भ में युवाओं की भागीदारी बहुत व्यापक रूप में नजर आती है और ये भी सच है कि जब युवा-पीढ़ी अपनी सभ्यता के साथ गर्व के साथ जुड़ जाती है तो उसकी जड़ें और मजबूत होती हैं और तब उसका स्वर्णिम भविष्य भी सुनिश्चित हो जाता है। हम इस बार कुम्भ के Digital Footprints भी इतने बड़े scale पर देख रहे हैं। कुम्भ की ये वैश्विक लोकप्रियता हर भारतीय के लिए गर्व की बात है।

साथियो, कुछ दिन पहले ही पश्चिम बंगाल में 'गंगा सागर' मेले का भी विहंगम आयोजन हुआ है। संक्रांति के पावन अवसर पर इस मेले में पूरी दुनिया से आए लाखों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई है। **'कुम्भ', 'पुष्करम' और 'गंगा सागर मेला' – हमारे ये पर्व, हमारे सामाजिक मेल-जोल को, सद्भाव को, एकता को बढ़ाने वाले पर्व हैं। ये पर्व भारत के लोगों को भारत की परम्पराओं से जोड़ते हैं और जैसे हमारे शास्त्रों ने संसार में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों पर बल दिया है,** वैसे ही हमारे पर्वों और परम्पराएँ भी आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक, हर पक्ष को भी सशक्त करते हैं।

साथियो, इस महीने हमने 'पौष शुक्ल द्वादशी' के दिन रामलला के प्राण प्रतिष्ठा पर्व की पहली वर्षगाँठ मनाई है। इस साल 'पौष शुक्ल द्वादशी' 11 जनवरी को पड़ी थी। इस दिन लाखों राम भक्तों ने अयोध्या में रामलला के साक्षात दर्शन कर उनका आशीर्वाद लिया। प्राण प्रतिष्ठा की ये द्वादशी, भारत की सांस्कृतिक चेतना की पुनः प्रतिष्ठा की द्वादशी है। इसलिए पौष शुक्ल द्वादशी का ये दिन एक तरह से प्रतिष्ठा द्वादशी का दिन भी बन गया

है। हमें विकास के रास्ते पर चलते हुए, ऐसे ही अपनी विरासत को भी सहेजना है, उनसे प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 2025 की शुरुआत में ही भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। **आज, मुझे ये बताते हुए गर्व है कि एक भारतीय space-tech start-up बेंगलुरु के Pixxel (पिक्सेल) ने भारत का पहला निजी satellite constellation – 'Firefly' सफलतापूर्वक launch किया है।** यह satellite constellation दुनिया का सबसे High-Resolution Hyperspectral Satellite Constellation है। इस उपलब्धि ने न केवल भारत को आधुनिक space technology में अग्रणी बनाया है, बल्कि यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में भी एक बड़ा कदम है। ये सफलता हमारे निजी space sector की बढ़ती ताकत और innovation का प्रतीक है। **मैं इस उपलब्धि के लिए Pixxel की टीम, ISRO और IN-SPACe को पूरे देश की ओर से बधाई देता हूँ।**

साथियो, कुछ दिन पहले हमारे वैज्ञानिकों ने space sector में ही एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की। हमारे scientists ने satellites की space docking कराई है। जब अंतरिक्ष में दो spacecraft connect किए जाते हैं, तो इस प्रक्रिया को Space Docking कहते हैं। यह तकनीक अंतरिक्ष में space station तक supply भेजने और crew mission के लिए अहम है। भारत ऐसा चौथा देश बना है, जिसने ये सफलता हासिल की है।

साथियो, हमारे वैज्ञानिक अंतरिक्ष में पौधे उगाने और उन्हें जीवित रखने के प्रयास भी कर रहे हैं। इसके लिए ISRO के वैज्ञानिकों ने लोबिया के बीज को चुना। 30 दिसम्बर को भेजे गए ये बीज

अंतरिक्ष में ही अंकुरित हुए। ये एक बेहद प्रेरणादायक प्रयोग है जो भविष्य में space में सब्जियाँ उगाने का रास्ता खोलेगा। ये दिखाता है कि हमारे वैज्ञानिक कितनी दूर की सोच के साथ काम कर रहे हैं।

साथियो, मैं आपको एक और प्रेरणादायक पहल के बारे में बताना चाहता हूँ। IIT मद्रास का ExTeM केंद्र अंतरिक्ष में manufacturing के लिए नई तकनीकों पर काम कर रहा है। ये केंद्र अंतरिक्ष में 3D–Printed buildings, metal foams और optical fibers जैसी तकनीकों पर Research कर रहा है। ये सेंटर बिना पानी के concrete निर्माण जैसी क्रांतिकारी विधियों को भी विकसित कर रहा है। **ExTeM (एक्सटेम) की ये Research, भारत के गगनयान मिशन और भविष्य के Space Station को मजबूती देगी। इससे manufacturing में आधुनिक Technology के भी नए रास्ते खुलेंगे।**

साथियो, ये सभी उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारत के वैज्ञानिक और innovators भविष्य की चुनौतियों का समाधान देने के लिए कितने visionary हैं। हमारा देश आज Space technology में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। मैं भारत के वैज्ञानिकों, innovators और युवा उद्यमियों को पूरे देश की ओर से शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपने कई बार इंसानों और जानवरों के बीच गजब की दोस्ती की तस्वीरें देखी होंगी, आपने जानवरों की वफादारी की कहानियाँ सुनी होंगी। जानवर पालतू हों या जंगल में रहने वाले पशु, इंसानों से उनका नाता कई बार हैरान कर देता है। जानवर भले बोल नहीं पाते, लेकिन उनकी भावनाओं को, उनके हाव-भाव को इंसान भली-भांति भाँप लेते हैं। जानवर भी प्यार की भाषा को समझते हैं, उसे निभाते भी हैं। मैं आपसे असम का एक उदाहरण साझा करना चाहता हूँ। असम में एक जगह है 'नौगाँव'। नौगाँव हमारे देश की महान विभूति श्रीमंत शंकरदेव जी का जन्म स्थान भी है। ये जगह बहुत ही सुंदर है।

यहाँ हाथियों का भी एक बड़ा ठिकाना है। इस क्षेत्र में कई घटनाएँ देखी जा रही थीं, जहाँ हाथियों के झुंड फसलों को बर्बाद कर देते थे, किसान परेशान रहते थे, जिससे आस-पास के करीब 100 गाँवों के लोग बहुत परेशान थे, लेकिन गाँववाले, हाथियों की भी मजबूरी समझते थे। उन्हें पता था कि हाथी भूख मिटाने के लिए खेतों का रूख कर रहे हैं, इसलिए गाँववालों ने इसका समाधान निकालने की सोची। गाँववालों की एक टीम बनी, जिसका नाम था 'हाथी बंधु'। हाथी बंधुओं ने सूझ-बूझ दिखाते हुए करीब 800 बीघा बंजर भूमि पर एक अनूठी कोशिश की। यहाँ गाँववालों ने आपस में मिल-जुल कर Napier grass लगाई। इस घास को हाथी बहुत पसंद करते हैं। इसका असर ये हुआ कि हाथियों ने खेतों की ओर जाना कम कर दिया। ये हजारों गाँववालों के लिए बहुत राहत की बात है। उनका ये प्रयास हाथियों को भी खूब भाया है।

साथियो, हमारी संस्कृति और विरासत हमें आस-पास के पशु-पक्षियों के साथ प्यार से रहना सिखाती है। ये हम सभी के लिए बहुत खुशी की बात है कि बीते दो महीनों में हमारे देश में दो नए Tiger Reserves जुड़े हैं। इनमें से एक है छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला Tiger Reserve और दूसरा है– MP में रातापानी Tiger Reserve.

मेरे प्यारे देशवासियो, स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था, जिस व्यक्ति में अपने Idea को लेकर जुनून होता है, वही अपने लक्ष्य को हासिल कर पाता है। किसी Idea को सफल बनाने के लिए हमारा passion और dedication सबसे जरूरी होता है। पूरी लगन और उत्साह से ही innovation, creativity और सफलता का रास्ता अवश्य निकलता है। **कुछ दिन पहले ही स्वामी विवेकानंदजी की जयंती पर मुझे, 'Viksit Bharat Young Leaders Dialogue' का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला। यहाँ मैंने देश के कोने-कोने से आए युवा साथियों के साथ अपना पूरा दिन बिताया।** युवाओं ने startups, culture, Women, Youth

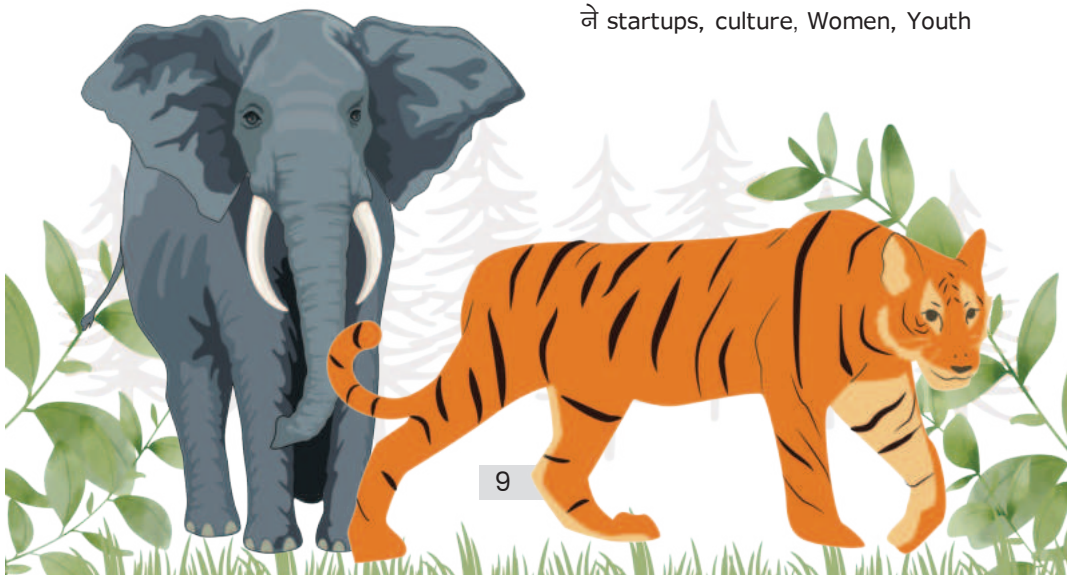

और Infrastructure जैसे कई sectors को लेकर अपने Ideas शेयर किए। यह कार्यक्रम मेरे लिए बहुत यादगार रहा।

साथियो, कुछ दिन पहले ही StartUp इंडिया के 9 साल पूरे हुए हैं। हमारे देश में जितने StartUps 9 साल में बने हैं, उनमें से आधे से ज्यादा Tier 2 और Tier 3 शहरों से हैं, और जब यह सुनते हैं तो हर हिन्दुस्तानी का दिल खुश हो जाता है यानी हमारा StartUp Culture बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं है, और आपको यह जानकर हैरानी होगी कि छोटे शहरों के StartUps में आधे से ज्यादा का नेतृत्व हमारी बेटियाँ कर रही हैं। जब यह सुनने को मिलता है कि अम्बाला, हिसार, कांगड़ा, चेंगलपट्टु, बिलासपुर, ग्वालियर और वाशिम जैसे शहर StartUps के Center बन रहे हैं, तो मन आनंद से भर जाता है। नगालैंड जैसे राज्य में, पिछले साल StartUps के Registration में 200 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। Waste Management, Non-Renewable Energy, Biotechnology और Logistics ऐसे Sector हैं, जिनसे जुड़े Start-Up सबसे ज्यादा देखे जा रहे हैं। ये Conventional Sectors नहीं हैं, लेकिन हमारे युवा-साथी भी तो Conventional से आगे की सोच रखते हैं, इसलिए उन्हें सफलता भी मिल रही है।

साथियो, 10 साल पहले जब कोई StartUp के क्षेत्र में जाने की बात करता था, तो उसे तरह - तरह के ताने सुनने को मिलते थे। कोई ये पूछता था कि आखिर StartUp होता क्या है? तो कोई कहता था कि इससे कुछ होने वाला नहीं है! लेकिन अब देखिए, एक दशक में कितना बड़ा बदलाव आ गया। आप भी भारत में बन रहे नए अवसरों का भरपूर लाभ उठाएँ। अगर आप खुद पर विश्वास रखेंगे तो आपके सपनों को भी नई उड़ान मिलेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, नेक नीयत से निस्वार्थ भावना के साथ किए गए कामों की चर्चा दूर-सुदूर पहुँच ही जाती है और हमारा 'मन की बात' तो इसका बहुत बड़ा Platform है। हमारे इतने विशाल

देश में दूर-दराज भी अगर कोई अच्छा काम कर रहा होता है, कर्तव्य भावना को सर्वोपरि रखता है, तो उसके प्रयासों को सामने लाने का ये बेहतरीन मंच है। अरुणाचल प्रदेश में दीपक नाबामजी ने सेवा की अनूठी मिसाल पेश की है। दीपकजी यहाँ Living-Home चलाते हैं, जहाँ मानसिक रूप से बीमार, शरीर से असमर्थ लोगों और बुजुर्गों की सेवा की जाती है, यहाँ पर Drugs की लत के शिकार लोगों की देख-भाल की जाती है। दीपक नाबामजी ने बिना किसी सहायता के समाज के वंचित लोगों, हिंसा पीड़ित परिवारों और बेघर लोगों को सहारा देने का अभियान शुरू किया। आज उनकी सेवा ने एक संस्था का रूप ले लिया है। उनकी संस्था को कई Award से भी सम्मानित किया गया है। लक्षद्वीप के कवरत्ती द्वीप पर Nurse के रूप में काम करने वाली के. हिंडुम्बीजी, उनका काम भी बहुत प्रेरित करने वाला है। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि वो 18 वर्ष पहले सरकारी नौकरी से Retire हो चुकी हैं, लेकिन आज भी उसी करुणा और स्नेह के साथ लोगों की सेवा में जुटी हैं, जैसे वो पहले करती थीं। लक्षद्वीप के ही के.जी. मोहम्मद जी के प्रयास, ये भी अद्भुत हैं। उनकी मेहनत से मिनीकॉय द्वीप का Marine Ecosystem मज़बूत हो रहा है। उन्होंने पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए कई गीत लिखे हैं। उन्हें लक्षद्वीप साहित्य कला अकादमी की तरफ से Best folk song award भी मिल चुका है। के.जी. मोहम्मद retirement के बाद वहाँ के museum के साथ जुड़कर भी काम कर रहे हैं।

साथियो, एक और बड़ी अच्छी खबर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से भी है। निकोबार जिले में virgin coconut oil को हाल ही में GI Tag मिला है। virgin coconut oil उसको GI Tag के बाद एक और नई पहल हुई है। इस oil के उत्पादन से जुड़ी महिलाओं को संगठित कर self help group बनाए जा रहे हैं, उन्हें Marketing और branding की special training भी दी जा रही है।

ये हमारे आदिवासी समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। मुझे विश्वास है, भविष्य में निकोबार का virgin coconut oil दुनिया-भर में धूम मचाने वाला है और इसमें सबसे बड़ा योगदान अंडमान और निकोबार के महिला self help group का होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, पल-भर के लिए आप एक दृश्य की कल्पना कीजिए- कोलकाता में जनवरी का समय है। दूसरा विश्व युद्ध अपने चरम पर है और इधर भारत में अंग्रेजों के खिलाफ गुस्सा उफान पर है। इसकी वजह से शहर में चप्पे-चप्पे पर पुलिसवालों की तैनाती है। कोलकाता के बीचो-बीच एक घर के आस-पास पुलिस की मौजूदगी ज्यादा चौकस है। इसी बीच, लम्बा Brown coat-pants और काली टोपी पहने हुए एक व्यक्ति रात के अँधेरे में एक बँगले से car लेकर बाहर निकलता है। मजबूत सुरक्षा वाली कई चौकियों को पार करते हुए वो एक रेलवे स्टेशन गोमो पहुँच जाता है। ये स्टेशन अब झारखंड में है। यहाँ से एक train पकड़कर वो आगे के लिए निकलता है। इसके बाद अफगानिस्तान होते हुए वो यूरोप जा पहुँचता है, और यह सब अंग्रेजी हुकूमत के अभेद्य किलेबंदी के बावजूद होता है।

साथियो, ये कहानी आपको फिल्मी सीन जैसी लगती होगी। आपको लग रहा होगा, इतनी हिम्मत दिखाने वाला व्यक्ति आखिर किस मिट्टी का बना होगा।

पराक्रम दिवस नेताजी की कालातीत विरासत का जश्न

दरअसल **ये व्यक्ति कोई और नहीं, हमारे देश की महान विभूति, नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे। 23 जनवरी यानी उनकी जन्म-जयंती को अब हम 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाते हैं। उनके शौर्य से जुड़ी इस गाथा में भी उनके पराक्रम की झलक मिलती है।** कुछ साल पहले मैं उनके उसी घर में गया था, जहाँ से वे अंग्रेजों को चकमा देकर निकले थे। उनकी वो car अब भी वहाँ मौजूद है। वो अनुभव मेरे लिए बहुत ही विशेष रहा। **सुभाष बाबू एक visionary थे।** साहस तो उनके स्वभाव में रचा-बसा था। इतना ही नहीं, वे बहुत कुशल प्रशासक भी थे। महज 27 साल की उम्र में वो Kolkata Corporation के Chief Executive Officer बने और उसके बाद उन्होंने Mayor की जिम्मेदारी भी सम्भाली। एक प्रशासक के रूप में

भी उन्होंने कई बड़े काम किए। बच्चों के लिए स्कूल, गरीब बच्चों के लिए दूध का इंतजाम और स्वच्छता से जुड़े उनके प्रयासों को आज भी याद किया जाता है। नेताजी सुभाष का रेडियो के साथ भी गहरा नाता रहा है। **उन्होंने 'आज़ाद हिन्द रेडियो' की स्थापना की थी, जिस पर उन्हें सुनने के लिए लोग बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करते थे।** उनके सम्बोधनों से विदेशी शासन के खिलाफ़ लड़ाई को एक नई ताकत मिलती थी। 'आज़ाद हिन्द रेडियो' पर अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, पश्तो और उर्दू में news bulletin का प्रसारण होता था। मैं नेताजी सुभाष चंद्र बोस को नमन करता हूँ। **देश-भर के युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक-से-अधिक पढ़ें और उनके जीवन से निरंतर प्रेरणा लें।**

साथियो, 'मन की बात' का ये कार्यक्रम हर बार मुझे राष्ट्र के सामूहिक प्रयासों से आप सब की सामूहिक इच्छाशक्ति से जोड़ता है। हर महीने मुझे बड़ी संख्या में आपके सुझाव, आपके विचार मिलते हैं और हर बार इन विचारों को देखकर विकसित भारत के संकल्प पर मेरा विश्वास और बढ़ता है। आप सब इसी तरह अपने-अपने काम से भारत को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए प्रयास करते रहें। इस बार की 'मन की बात' में फिलहाल इतना ही। अगले महीने फिर मिलेंगे– भारतवासियों की उपलब्धियाँ, संकल्पों और सिद्धियों की नई गाथाओं के साथ, बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारतीय संविधान की महिला शिल्पकार

"मैं संविधान सभा के उन सभी महान व्यक्तित्वों को नमन करता हूँ, जिन्होंने हमें हमारा पवित्र संविधान दिया। संविधान सभा के दौरान अनेक विषयों पर लम्बी-लम्बी चर्चाएँ हुईं। वो चर्चाएँ संविधान सभा के सदस्यों के विचार, उनकी वो वाणी, हमारी बहुत बड़ी धरोहर है।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"भारतीय संविधान को बनाने की दिशा में पहला कार्य 1946 में संविधान सभा की स्थापना के साथ शुरू हुआ। यह सभा प्रांतों, रियासतों और अन्य क्षेत्रों से चुने गए प्रतिनिधियों से बनी थी और इसकी प्राथमिक जिम्मेदारी नए स्वतंत्र राष्ट्र के लिए संविधान तैयार करना था।"

– ए. सूर्य प्रकाश
पूर्व अध्यक्ष, प्रसार भारती

संविधान सभा का गठन 6 दिसम्बर, 1946 को भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने के महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए किया गया था। शुरू में सभा में 389 सदस्य थे, बाद में इनकी संख्या घटाकर 299 कर दी गई। इनमें 15 महिला सदस्य शामिल थीं। विविध पृष्ठभूमि से आने वाली इन 15 प्रमुख सदस्यों ने न केवल संविधान के प्रारूपण के दौरान, बल्कि उससे पहले और बाद में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। इनमें राजनेता, स्वतंत्रता सेनानी और वकील शामिल थीं, जिन्होंने सभा में हुई चर्चाओं में भाग लिया और अपने विचार तथा राय को मज़बूती से रखा।

अम्मू स्वामीनाथन एक निडर सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ थीं। उन्होंने महिला भारतीय संघ (डब्ल्यूआईए) की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने बाल विवाह और देवदासी प्रथा

जैसे सामाजिक मुद्दों का समाधान करने की हिमायत की और महिलाओं के लिए मतदान के अधिकार की मांग की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संविधान मौलिक अधिकारों और निर्देशक सिद्धांतों के स्तम्भों पर टिका है, जो महिलाओं के लिए पूजा की स्वतंत्रता और समान अधिकार सुनिश्चित करता है।

एनी मैस्करेन रियासतों को भारत में एकीकृत करने के आंदोलन में उनकी भूमिका एक प्रमुख नेता की थी। वह त्रावणकोर राज्य कांग्रेस में शामिल होने वाली पहली महिलाओं में से थीं और बाद में हिंदू कोड बिल के लिए संविधान सभा की चयन समिति में शामिल हुईं। वह केरल से सांसद बनने वाली पहली महिला थीं।

दक्षिणायनी वेलायुधन संविधान सभा में एकमात्र अनुसूचित जाति की महिला थीं जिन्होंने भारत के सभी नागरिकों के लिए सम्मान तथा समानता की आवश्यकता पर जोर दिया और जाति-आधारित भेदभाव छोड़कर आगे बढ़ने का आग्रह किया। उनके

भाषणों में अक्सर लोकतांत्रिक सिद्धांतों और समान अधिकारों पर आधारित एक संगठित राष्ट्र के महत्त्व पर प्रकाश डाला जाता था।

बेगम ऐजाज रसूल संविधान सभा की एकमात्र मुस्लिम महिला सदस्य थीं। उन्होंने अपना पहला चुनाव जीतने के लिए 1937 में पर्दा प्रथा को त्याग दिया। महिला खेलों की एक उत्साही समर्थक होने के नाते उन्होंने महिला हॉकी को लोकप्रिय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दुर्गाबाई देशमुख एक समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थीं, जिन्होंने महात्मा गाँधी के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा कई बार जेल भेजी गईं। उन्होंने विदेशों में पारिवारिक न्यायालयों की प्रणालियों का अध्ययन करने के बाद भारत में भी इसी तरह की व्यवस्था लागू करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

हंसा जीवराज मेहता महिला अधिकारों के लिए प्रतिबद्ध वकील थीं, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र में मानवाधिकारों

की सार्वभौमिक घोषणा में 'सभी पुरुषों को समान बनाया गया है' के स्थान पर 'सभी मनुष्यों को समान बनाया गया है' को शामिल करने पर ज़ोर दिया। 15 अगस्त, 1947 को उन्होंने भारत की महिलाओं की ओर से संविधान सभा में राष्ट्रीय ध्वज प्रस्तुत किया।

कमला चौधरी एक लेखिका और राजनीतिक कार्यकर्ता थीं, जिन्होंने 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया था और अंग्रेज़ों ने उन्हें जेल में डाल दिया था। संविधान को अपनाने के बाद उन्होंने प्रांतीय सरकार के सदस्य के रूप में कार्य किया। उन्होंने जेंडर भेदभाव, किसानों के शोषण और विधवाओं की दयनीय स्थिति जैसे विषयों पर लिखा।

लीला रॉय एक राजनीतिज्ञ तथा समाज सुधारक थीं और नेताजी सुभाष चंद्र बोस की करीबी सहयोगी थीं। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए बड़े पैमाने पर काम किया। उन्होंने भारत के विभाजन के विरोध में विधानसभा से इस्तीफा दे दिया।

मालती चौधरी एक प्रमुख समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और कर्मठ गाँधीवादी नेता थीं। उन्होंने विनोबा भावे के नेतृत्व में भूदान आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने उत्कल कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (1938), नवभारत युवक संघ (1934) और बाजी राउत छात्रावास (1948) की स्थापना की।

पूर्णिमा बनर्जी एक निडर कार्यकर्ता और इलाहाबाद में कांग्रेस की एक प्रमुख सदस्य थीं। विधानसभा में उन्होंने प्रस्तावना, निवारक नज़रबंदी और राज्यसभा सदस्यों की योग्यता पर चर्चा में योगदान दिया।

राजकुमारी अमृत कौर ने भारत की पहली महिला कैबिनेट मंत्री के रूप में एम्स और लेडी इरविन कॉलेज की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने राज्य नीति निर्देशक सिद्धांतों में सार्वजनिक स्वास्थ्य

पर प्रावधानों को तैयार करने में योगदान दिया।

रेणुका रे महिलाओं के उत्तराधिकार अधिकारों की दृढ़ समर्थक थीं और उन्होंने विधानसभा में अल्पसंख्यक तथा महिला अधिकारों पर चर्चा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सरोजिनी नायडू को 'भारत की कोकिला' के रूप में जाना जाता था। वह एक कवयित्री, कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी थीं। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनीं और बाद में संयुक्त प्रांत की पहली राज्यपाल के रूप में कार्य किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया।

सुचेता कृपलानी भारत छोड़ो आंदोलन की एक अभिन्न शख्सियत हैं जिन्होंने भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री के रूप में इतिहास रचा। विधानसभा के स्वतंत्रता सत्र के दौरान उनका वंदे मातरम का गायन बहुत प्रसिद्ध है।

विजयलक्ष्मी पंडित एक राजनयिक और राजनीतिक नेता थीं, जो संयुक्त राष्ट्र महासभा (1953) की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में भारत का प्रतिनिधित्व किया और वैश्विक मंच पर एक नए स्वतंत्र लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत की छवि को पेश करने में एक महत्त्वपूर्ण आवाज़ बनीं।

संविधान सभा की इन 15 महिला वास्तुकारों ने न्यायपूर्ण और समावेशी लोकतंत्र की नींव रखी। उनके साहस, दृढ़ संकल्प और बुद्धिमत्ता ने न केवल भारत का संविधान तैयार करने में योगदान दिया, बल्कि राष्ट्र के राजनीतिक और सामाजिक विकास में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का मार्ग भी प्रशस्त किया। उनकी विरासत राष्ट्र के लिए सदैव प्रेरणादायक बनी रहेगी।

भारतीय संविधान का निर्माण विरासत और प्रभाव

ए. सूर्य प्रकाश
पूर्व अध्यक्ष, प्रसार भारती

भारत के संविधान की प्रस्तावना में लिखा है–

हम, भारत के लोग, भारत को एक
सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी,
पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य
बनाने के लिए तथा उसके समस्त
नागरिकों को :
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक
न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त
कराने के लिए,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली
बन्धुता बढ़ाने के लिए
दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान
सभा में आज तारीख 26 नवम्बर,
1949 ई. को एतद्द्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित
करते हैं।

भारतीय संविधान की विरासत एक सुदृढ़ स्मारकीय दस्तावेज के रूप में है, जो न केवल भारत की शासन संरचना को परिभाषित करता है, बल्कि एक विविध, लोकतांत्रिक तथा बहुलवादी समाज की आकांक्षाओं को भी मूर्त रूप प्रदान करता है। विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक संगठनों के संयुक्त प्रयासों से किया गया इसका निर्माण, देश के आधुनिक इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। संक्षेप में, यह इस सत्य का प्रतीक है कि भारत सभ्यतागत रूप से लोकतांत्रिक है और विविधता के साथ सामंजस्य रखता है।

संविधान का मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया दो साल, ग्यारह महीने और अट्ठारह दिनों से अधिक समय तक चली। यह संवैधानिक इंजीनियरिंग का एक असाधारण कार्य था, जिसे भारत की संविधान सभा, जिसे स्वतंत्रता के बाद देश के कानून को तैयार करने का कार्य सौंपा गया था, ने अंजाम दिया था।

महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और डॉ. बी.आर. आम्बेडकर जैसे अनुकरणीय व्यक्तियों के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने एक ऐसे संविधान का आधार तैयार किया जो भारत के मूल्यों, आकांक्षाओं और ऐतिहासिक अनुभवों को प्रतिबिम्बित कर सके। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत परिवर्तन की स्थिति में था और औपनिवेशिक शासन, स्वशासन का मार्ग प्रशस्त कर रहा था। सभी नागरिकों के लिए न्याय, समानता और स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए भारतीय राष्ट्र को किस तरह से सबसे बेहतर ढंग से संरचित किया जाए, यह प्रश्न गम्भीर चिंता का विषय बन गया था।

भारतीय संविधान को बनाने की दिशा में पहला कार्य 1946 में संविधान सभा की स्थापना के साथ शुरू हुआ। यह सभा प्रांतों, रियासतों और अन्य क्षेत्रों से चुने गए प्रतिनिधियों से बनी थी और इसकी प्राथमिक जिम्मेदारी नए स्वतंत्र राष्ट्र के लिए संविधान तैयार करना था। संविधान सभा को भारत के सभी नागरिकों के लिए मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रता की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए विविध जातीय, भाषाई और धार्मिक समूहों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का कठिन कार्य सौंपा गया था।

भारतीय संविधान के निर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक डॉ. बी.आर. आम्बेडकर थे, जिन्होंने मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उनका नेतृत्व और दूरदर्शिता अंतिम दस्तावेज को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण थी। हाशिए पर पड़े समूहों के अधिकारों के लिए डॉ. आम्बेडकर का समर्थन संविधान के सामाजिक न्याय, सकारात्मक कार्रवाई और अस्पृश्यता के उन्मूलन के प्रावधानों में परिलक्षित हुआ।

इसके अतिरिक्त, संविधान ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जो भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के सामने आने वाली लम्बे समय से चली आ रही सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं को दूर करने में महत्त्वपूर्ण थे। जैसा कि डॉ. आम्बेडकर ने 25 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा में संविधान पर चर्चा का सारांश प्रस्तुत

करते हुए कहा था, "स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के इन सिद्धांतों को त्रिमूर्ति में अलग-अलग वस्तुओं के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। ये इस अर्थ में त्रिमूर्ति का इस प्रकार संयोजन करते हैं जिसमें एक को दूसरे से अलग करना लोकतंत्र के उद्देश्य को पराजित करना है। स्वतंत्रता को समानता से और समानता को स्वतंत्रता से अलग नहीं किया जा सकता है, न ही स्वतंत्रता और समानता को बंधुत्व से अलग किया जा सकता है। बिना बंधुत्व के समानता और स्वतंत्रता पेंट की परत से अधिक गहरी नहीं होगी।"

इसके अलावा, उन्होंने चेतावनी दी थी कि केवल राजनीतिक समानता काम नहीं करेगी। हमें सामाजिक और आर्थिक धरातल पर भी समानता के लिए प्रयास करने होंगे।

भारतीय संविधान में कुछ प्रावधानों को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय स्रोतों से लिया गया है, जिनमें ब्रिटेन, अमरीका, आयरलैंड और कनाडा की शासन प्रणालियों के प्रावधान शामिल हैं, लेकिन मर्म या मूल मूल्य और सार, भारत के सभ्यतागत अनुभव से प्राप्त हुए हैं। उदाहरण के लिए, यह भूमि और इसके लोग ऋग्वेद के दिनों से ही विविधता और विचारों की बहुलता के बीच सद्भाव में रहते आए हैं, जिसमें कहा गया है– एकम सत्, विप्रा बहुधा वदंति, जिसका अर्थ है– सत्य एक है, लेकिन ज्ञानी इसे अलग तरह से समझते हैं। दूसरे शब्दों में संविधान भारत की सांस्कृतिक विरासत की भाषा बोलता है और देश की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक वास्तविकताओं पर विचार करने वाले प्रावधानों के साथ भारतीय संदर्भ के लिए विशिष्ट रूप से तैयार किया गया है।

डॉ. आम्बेडकर ने संविधान सभा में भारत की लोकतांत्रिक विरासत का विशेष रूप से उल्लेख किया और 2500 साल पहले हिन्दू साम्राज्यों और बौद्ध संघों में प्रचलित लोकतांत्रिक तथा संसदीय प्रथाओं के बारे में बताया।

"ऐसा नहीं है कि भारत को लोकतंत्र का ज्ञान नहीं था। एक समय था जब भारत में गणतंत्र थे और जहाँ राजतंत्र भी थे, वे या तो निर्वाचित थे या सीमित थे। वे कभी भी निरंकुश नहीं थे। ऐसा नहीं है कि भारत को संसद या संसदीय प्रक्रिया का ज्ञान नहीं था। बौद्ध भिक्षु संघों के अध्ययन से पता चलता है कि न केवल संसदें थीं, बल्कि संघ भी संसदों के अलावा कुछ नहीं थे। संघ आधुनिक समय में ज्ञात संसदीय प्रक्रिया के सभी नियमों को जानते और उनका पालन करते थे। उनके पास बैठने की व्यवस्था, प्रस्तावों, संकल्पों, कोरम, व्हिप, मतों की गिनती, मतपत्र द्वारा मतदान, निंदा

प्रस्ताव, नियमितीकरण, न्यायिक निर्णय आदि के बारे में नियम थे। यद्यपि संसदीय प्रक्रिया के ये नियम बुद्ध द्वारा संघों की बैठकों में लागू किए गए थे, लेकिन उन्होंने इन्हें अपने समय में देश में कार्यरत राजनीतिक असेम्बलियों के नियमों से उधार लिया होगा।"

उनकी ये टिप्पणियाँ हमें इस बारे में कई गलतफहमियों को दूर करने में मदद करेंगी कि हमने अपनी लोकतांत्रिक तथा संसदीय परम्पराओं और बहुलता के प्रति सम्मान को कहाँ तथा कब प्राप्त किया, जो लोकतांत्रिक लोकाचार का केंद्र हैं।

इसलिए संविधान में निहित मूल्य मौलिक अधिकारों, राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों और संघीय शासन प्रणाली के समावेश से उभरे हैं, जो सभी भारत के लोकतांत्रिक आदर्शों को दर्शाते हैं। सरकार के गणतंत्रात्मक स्वरूप का विचार चार या पाँच सहस्राब्दियों पहले का है, जब भारत में कई गणराज्य थे और राज्य के प्रमुख सहित सबका चुनाव किया जाता था। इसके अलावा, संविधान के भाग-IV में राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत जो सरकार को गरीबों, मजदूर वर्ग, समाज के वंचित वर्गों, महिलाओं और बच्चों की सहायता करने के लिए नीतियाँ अपनाने के वास्ते प्रेरित करते हैं, उन्हें कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पाया जा सकता है, जो I-III शताब्दी ईस्वी पूर्व का है।

भारतीय संविधान का प्रभाव दूरगामी और गहरा रहा है। 26 जनवरी, 1950 को इसे अपनाने पर इसने स्थिरता और व्यवस्था की भावना प्रदान की और राष्ट्र के शासन के लिए एक कानूनी ढाँचा पेश किया। संविधान ने भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए आधारशिला के रूप में काम किया है, जिसने इसकी राजनीतिक, सामाजिक और कानूनी प्रणालियों के विकास का मार्गदर्शन किया है। दशकों से संविधान सामाजिक न्याय के उद्देश्य को आगे बढ़ाने, हाशिए पर पड़े समूहों को सशक्त बनाने और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में एक शक्तिशाली माध्यम रहा है। निष्कर्ष के तौर पर, भारतीय संविधान का निर्माण दूरदर्शिता, प्रतिबद्धता और आम सहमति बनाने की विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। इसका प्रभाव परिवर्तनकारी रहा है, जिसने एक सम्प्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में भारत के विकास की दिशा को तैयार किया है। संविधान एक शक्तिशाली और विकासशील दस्तावेज के रूप में काम करना जारी रखता है, जो न्याय, समानता और स्वतंत्रता के मूलभूत सिद्धांतों में निहित रहते हुए भारतीय समाज की बदलती ज़रूरतों के अनुकूल है। संविधान के निर्माताओं की दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी 1950 में थी। यह राष्ट्र के भविष्य के लिए एक कालातीत मार्गदर्शक प्रदान करती है और भारत की एकता तथा अखंडता को सुनिश्चित करती है।

गणतंत्र दिवस 2025

गणतंत्र दिवस परेड 2025, भारत की सांस्कृतिक विविधता और सैन्य शक्ति का एक अद्वितीय सम्मिश्रण है, जिसमें संविधान के लागू होने के 75 वर्ष और जनभागीदारी पर विशेष ध्यान दिया गया। इंडोनेशिया गणराज्य के राष्ट्रपति श्री प्रबोवो सुबियांटो परेड के मुख्य अतिथि थे।

इस वर्ष विभिन्न राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों की 31 झाँकियों ने भाग लिया। इनका विषय था 'स्वर्णिम भारत : विरासत और विकास।'

भारतीय संविधान में कैलीग्राफी कला

भारतीय संविधान में निहित कला देश की समृद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करती है। हाथ से पेंट किए गए चित्रण शांतिनिकेतन के कला भवन के प्रिंसिपल नंदलाल बोस और उनकी टीम द्वारा बनाए गए थे।

राष्ट्रीय प्रतीक एवं सत्यमेव जयते का नारा

संविधान की शुरुआत राष्ट्रीय प्रतीक के चित्रण और सत्यमेव जयते (सत्य की ही जीत होती है) के नारे से होती है। राष्ट्रीय गौरव का यह प्रतीक सारनाथ में अशोक के सिंह स्तम्भ पर आधारित है। अब यह वाराणसी के पास सारनाथ संग्रहालय में रखा हुआ है।

कलाकार : दीनानाथ भार्गव

मोहनजोदड़ो सील

संविधान का पहला भाग हड़प्पा सभ्यता के एक लोकप्रिय सील-मार्क 'सांड' से शुरू होता है। सांड की सील उस समय की वस्तुओं में अक्सर दिखाई देती है।

सील जैसी वस्तुएँ ऐतिहासिक अतीत के महत्त्व को प्रमाणित करती हैं, व्यापार और वाणिज्य की अवधारणा का समर्थन करती हैं तथा प्रगति और विकास की भावना का संकेत देती हैं।

कलाकार : कृपाल सिंह शेखावत और ब्योहर राममनोहर सिन्हा

वैदिक आश्रम से गुरुकुल दृश्य

कलाकार : कृपाल अमला सरकार और नंदलाल बोस

संविधान का भाग-II नागरिकता से सम्बंधित है। यह भाग एक आश्रम के चित्रण से शुरू होता है जिसमें तपस्वी जैसी आकृतियाँ प्रार्थना और यज्ञ कर रही हैं। यह दृश्य कई पेड़ों की उपस्थिति के साथ एक हरे-भरे वातावरण में रचा-बसा प्रतीत होता है।

रामायण का दृश्य

कलाकार
जमुना सेन

अधर्म पर धर्म की विजय के प्रतीक श्री राम, सीता माता और श्री लक्ष्मण को संविधान के भाग-III में रामायण के एक दृश्य में दर्शाया गया है जो मौलिक अधिकारों के एक महत्त्वपूर्ण घटक से सम्बंधित है।

मतदान में समावेशिता

सभी के लिए प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के प्रयास

"मैं चुनाव आयोग को भी धन्यवाद दूँगा, जिसने समय–समय पर हमारी मतदान प्रक्रिया को आधुनिक बनाया है, मजबूत किया है। आयोग ने जन-शक्ति को और शक्ति देने के लिए, तकनीक की शक्ति का उपयोग किया। मैं चुनाव आयोग को निष्पक्ष चुनाव के उनके commitment के लिए बधाई देता हूँ। मैं देशवासियों से कहूँगा कि वो ज़्यादा-से-ज़्यादा संख्या में अपने मत के अधिकार का उपयोग करें, हमेशा करें और देश के Democratic Process का हिस्सा भी बनें और इस Process को सशक्त भी करें।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

भारत, गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाता है। इसी दिन भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना की वर्षगाँठ होती है। जैसा कि प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में बताया गया है कि यह दिन लोकतंत्र को बनाए रखने में निर्वाचन आयोग की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। 1951-52 में पहले चुनावों के बाद से भारत का लोकतंत्र दुनिया के लिए लोगों द्वारा संचालित शासन का एक प्रेरक उदाहरण बन गया है। प्रधानमंत्री ने ठीक ही कहा है, लोकतंत्र तब पनपता है, जब हर व्यक्ति अपने वोट के अधिकार का प्रयोग करता है।

लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत अपनी चुनावी प्रक्रिया में समावेशिता पर बहुत जोर देता है। देश ने यह मानते हुए कि सच्चे लोकतंत्र के लिए सभी के प्रतिनिधित्व की आवश्यकता होती है, ऐसी नीतियों और पहलों को लागू किया है जो यह सुनिश्चित करती हैं कि हाशिए पर पड़े दिव्यांग और दूरदराज के समुदाय पीछे न छूटें।

नागरिकों को शिक्षित करना

भारत के निर्वाचन आयोग का प्रमुख कार्यक्रम 'SVEEP' (व्यवस्थित मतदाता शिक्षा और चुनावी भागीदारी) जैसी पहल भारत में मतदाता शिक्षा, मतदाता जागरूकता और मतदाता साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए 2009 में शुरू की गई थी। अपनी स्थापना के बाद से यह विशेषकर हाशिए के समुदायों के मतदाताओं को तैयार करने और उन्हें चुनावी प्रक्रिया से सम्बंधित बुनियादी ज्ञान से लैस करने की दिशा में काम कर रहा है।

दिव्यांग मतदाताओं के लिए पहुँच सुनिश्चित करना

निर्वाचन आयोग ने दिव्यांग व्यक्तियों (PWDs) के लिए चुनाव सुलभ बनाने को प्राथमिकता दी है। ब्रेल-सक्षम इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVMs), मतदान केंद्रों पर रैम्प और सांकेतिक भाषा के दुभाषिए की व्यवस्था करना उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के कुछ उपाय हैं। निर्वाचन आयोग चुनाव के दौरान हर मतदान केंद्र पर व्हीलचेयर, पिक-एंड-ड्रॉप सेवाएँ और विशेष शौचालय जैसी सुविधाएँ भी प्रदान करता है, जिससे दिव्यांग नागरिकों के लिए यह प्रक्रिया सरल हो जाती है।

वरिष्ठ नागरिकों का समावेशन

लोकसभा चुनाव के इतिहास में पहली बार भारत के निर्वाचन आयोग ने 2024 के आम चुनावों के दौरान 85 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग व्यक्तियों (PWDs) के लिए घर से मतदान की सुविधा शुरू की। इस अभूतपूर्व पहल से देश भर में 81 लाख से अधिक वरिष्ठ मतदाताओं और 90 लाख से अधिक दिव्यांगों को लाभ हुआ, जिससे चुनावी प्रक्रिया में अधिक समावेशिता सुनिश्चित हुई।

जंगल के बीच लोकतंत्र

लोकतंत्र के प्रति भारत की प्रतिबद्धता के एक और उल्लेखनीय प्रदर्शन में, गुजरात के गिर जंगल के अंदर अकेले मतदाता तथा मंदिर के पुजारी महंत हरिदास के लिए एक

मतदान केंद्र स्थापित किया गया। चुनाव अधिकारियों ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर मतदाता अपना मत डाल सके, ऊबड़-खाबड़ इलाकों से दो दिन की यात्रा की, जिससे निर्वाचन आयोग की यह प्रतिबद्धता प्रदर्शित हुई कि हर वोट मायने रखता है।

युवा लोकतंत्र के स्तम्भ हैं

युवाओं की बड़ी आबादी के साथ, पहली बार मतदान करने वालों को जोड़ने के प्रयास महत्त्वपूर्ण हैं। भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए 'मेरा पहला वोट देश के लिए' अभियान ने युवा मतदाताओं को पंजीकरण कराने और चुनाव में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसमें भारत के भविष्य को आकार देने में उनके पहले वोट के महत्त्व को उजागर करने के लिए संवादमूलक अभियान, मतदाता शिक्षा कार्यक्रम और प्रेरक संदेश शामिल थे।

चुनावों में पिंक बूथ

निर्वाचन आयोग की एक पहल 'पिंक बूथ' की स्थापना है जिनका प्रबंधन पूरी तरह महिलाओं को सौंपा गया है। इसका उद्देश्य स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ावा देना और चुनावी प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना है। ओडिशा में 2024 के लोकसभा चुनावों में आयोग ने हर विधानसभा सीट पर 10 प्रतिशत मतदान केंद्रों को महिलाओं द्वारा संचालित केंद्र के रूप में स्थापित किया। इसके बाद उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में भी यह सफलतापूर्वक लागू किया गया है, जहाँ महिलाओं द्वारा संचालित केंद्रों ने महिला मतदाताओं की संख्या और सशक्तीकरण में वृद्धि की है।

प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना

ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से मतदाता पंजीकरण को सरल बनाया गया है और CVIGIL ऐप जैसी पहल

मतदाताओं को चुनाव से सम्बंधित कदाचार की रिपोर्ट करने की सुविधा देती है। इसके अतिरिक्त मतदान केंद्रों पर लाइव वेबकास्टिंग पारदर्शिता सुनिश्चित करती है और प्रक्रिया में विश्वास पैदा करती है।

भारत का लोकतंत्र सभी के प्रतिनिधित्व के सिद्धांत पर पनपता है। निर्वाचन आयोग ने शारीरिक क्षमता, स्थान या जेंडर की परवाह किए बिना प्रत्येक नागरिक को शामिल करने के निरंतर प्रयासों के माध्यम से एक वैश्विक उदाहरण स्थापित किया है।

आइए हम चुनाव का पर्व मनाते हुए, अधिक-से-अधिक संख्या में मतदान करने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनने के प्रधानमंत्री के आह्वान को याद करें। हम साथ मिलकर, एक मजबूत और अधिक समावेशी लोकतंत्र का निर्माण जारी रखें, जिसमें हर वोट मायने रखता है और हर आवाज़ सुनी जाती है।

भारत में मतदान प्रक्रिया का विकास

बैलेट बॉक्स से ईवीएम तक

VOTE!

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जिसने पिछले कुछ दशकों में अपनी मतदान प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण बदलाव किए हैं। यहाँ विभिन्न समयावधियों में अर्जित की गई प्रमुख उपलब्धियों को दर्शाया गया है :

1951-52 : पहला आम चुनाव

भारत के पहले आम चुनावों ने इसकी लोकतांत्रिक यात्रा की शुरुआत को चिह्नित किया। मतदाताओं ने मतपेटियों का उपयोग करके अपना वोट डाला। इस प्रक्रिया में मतपत्रों को प्रत्येक उम्मीदवार के चुनाव चिह्न से पहचाने जाने वाले निर्धारित सीलबन्द बक्से में मैन्युअल रूप से डाला जाता था।

1962 : मार्किंग प्रणाली की शुरुआत

1962 में तीसरे आम चुनावों से भारत निर्वाचन आयोग (ECI) ने मतदान की मार्किंग प्रणाली की शुरुआत की। मतदाताओं ने सभी उम्मीदवारों के नाम और प्रतीकों को सूचीबद्ध करने वाले एक सामान्य मतपत्र का उपयोग किया। उन्होंने एक ऐरो क्रॉस-मार्क रबर स्टैम्प का उपयोग करके अपनी पसंद को चिह्नित किया और फिर चिह्नित मतपत्रों को एक सामान्य मतपेटी में डाल दिया।

1982 : ईवीएम का पहला परीक्षण

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) का पहली बार केरल के परूर विधानसभा क्षेत्र में परीक्षण किया गया। हालाँकि कानूनी और तकनीकी बाधाओं के कारण उन्हें व्यापक रूप से अपनाने से रोक दिया गया।

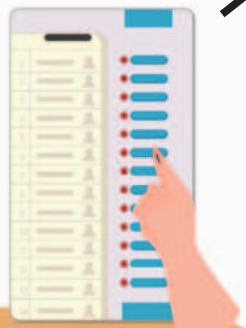

1990 का दशक : परिवर्तन का युग

निर्वाचन आयोग ने 1998 में दिल्ली, मध्य प्रदेश और राजस्थान विधानसभा चुनावों के दौरान चुनिंदा निर्वाचन क्षेत्रों में प्रायोगिक उपयोग के साथ बड़े पैमाने पर ईवीएम की शुरुआत की।

2019 : पूर्ण वीवीपीएटी कवरेज

2019 के आम चुनावों के लिए सभी निर्वाचन क्षेत्रों में ईवीएम के साथ-साथ वीवीपीएटी मशीनें भी रखी गईं जिससे चुनावी प्रक्रिया में मतदाताओं का अधिक विश्वास सुनिश्चित हुआ।

2013 : वोटर वैरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (VVPAT) की शुरुआत

पारदर्शिता बढ़ाने के लिए वीवीपीएटी प्रणाली को चुनिंदा निर्वाचन क्षेत्रों में लागू किया गया था। इससे मतदाता यह सत्यापित कर सके कि उनका वोट सही तरीके से डाला गया है। निर्वाचन आयोग ने बाद के चुनावों में धीरे-धीरे इसके उपयोग का विस्तार किया।

2004 : राष्ट्रव्यापी ईवीएम कार्यान्वयन

भारत 2004 में एक ऐतिहासिक कदम के रूप में ईवीएम का उपयोग करके अपने पूरे आम चुनाव कराने वाला पहला देश बन गया। इसने तेज, अधिक विश्वसनीय और छेड़छाड़-रहित चुनावों की ओर बदलाव को चिह्नित किया।

भविष्य के नवाचार

निर्वाचन आयोग, भारत की विशाल और विविध आबादी के लिए चुनावों को और भी अधिक समावेशी तथा सुलभ बनाने के लिए रिमोट वोटिंग सिस्टम और ब्लॉकचेन-आधारित वोटिंग जैसी नई तकनीकों की खोज जारी रखे हुए है।

बैलेट बॉक्स से लेकर ईवीएम तक भारत की यात्रा नवाचार और अनुकूलन के माध्यम से लोकतंत्र को मज़बूत करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। प्रत्येक कदम अपने नागरिकों के लिए स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्र के समर्पण को दर्शाता है।

नदियों से जुड़ता अध्यात्म और लोग

“उत्तर से दक्षिण तक मान्यताओं को मानने के तरीके एक जैसे ही हैं। एक तरफ प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में कुम्भ का आयोजन होता है, वैसे ही दक्षिण भू-भाग में गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा और कावेरी नदी के तटों पर पुष्करम होते हैं। ये दोनों ही पर्व हमारी पवित्र नदियों से, उनकी मान्यताओं से जुड़े हुए हैं।”

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

‘इंद्र ने जब राक्षस का वध किया तो उन्होंने सूर्य को ढकने वाले बादल को हटा दिया, जो पानी का स्रोत है। मुक्त नदियाँ धरती पर ऐसे दौड़ीं जैसे गौ-माता अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिए उत्सुक होती है।’ – ऋग्वेद 1.61.10

भारत वह भूमि है जहाँ प्रकृति और अध्यात्म एक-दूसरे से सहज जुड़े हुए हैं और इस सम्बंध में नदियाँ पवित्रता का प्रतीक हैं। ये जल निकाय न केवल जीवन और जीविका के स्रोत हैं, बल्कि देश के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने में भी गहराई से अंतर्निहित हैं। पवित्र गंगा से लेकर विशाल ब्रह्मपुत्र तक, भारत में नदियाँ दैवीय संस्थाओं, तीर्थ स्थलों और मानव सभ्यता के केंद्र के रूप में कार्य करती हैं। पूरे इतिहास में महान सभ्यताएँ विशाल नदियों के किनारे फली-फूलीं, जिन्होंने कृषि के लिए प्रचुर मात्रा में पानी उपलब्ध कराया। इस सहजीवी सम्बंध ने नदियों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता के सांस्कृतिक लोकाचार को मज़बूत किया, उन्हें पोषण करने वाली माँ के रूप में माना। मेसोपोटामिया के लोग टिगरिस नदी, मिस्र के लोग नील तथा फरात नदी और चीन के लोग हुआंग हे नदी के किनारे फले-फूले। भारत में सिंधु घाटी सभ्यता सिंधु के किनारे पनपी, जबकि वैदिक सभ्यता गंगा के किनारे समृद्ध हुई। जीवन को बनाए रखने में नदियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

ऋग्वेद के आरम्भिक भजन अक्सर सिंधु और सरस्वती का गुणगान करते हैं, जबकि बाद के भजन अक्सर गंगा की महिमा के बारे में हैं। हिन्दू ग्रंथों में अक्सर सप्त सिंधु या सात पवित्र नदियों की अवधारणा का उल्लेख किया गया है। सबसे अधिक उद्धृत नदियाँ हैं– सिंधु, सरस्वती, गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी।

ऋग्वेद की एक कहानी बताती है कि सूखे के प्रतीक वृत्रासुर ने कैसे नदियों को कैद कर लिया। उन्हें मुक्त करने के लिए इंद्र ने 360 दिनों तक वृत्रासुर के खिलाफ युद्ध लड़ा। अंततः उन्होंने उसके 99 किलों को तोड़ दिया और उसे उस वज्र से मार गिराया जो ऋषि दधीचि की हड्डियों से बना था।

हिन्दू पौराणिक कथाओं में कुछ नदियों को दिव्य प्राणियों का अवतार माना जाता है। कभी कौशिकी के नाम से जानी जाने वाली कोसी नदी को सत्यवती की मृत्यु के बाद उनका परिवर्तित रूप माना जाता है। श्रद्धेय ऋषि विश्वामित्र की बड़ी बहन सत्यवती कुशक वंश से थीं। इसी तरह गंगा को देवी के रूप में माना जाता है और अपने सांसारिक रूप में वह राजा शांतनु की पत्नी तथा भीष्म की माँ थीं।

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार माना जाता है कि गंगा स्वर्ग से उतरी थी ताकि मृतकों की आत्माओं को शुद्ध

किया जा सके और उन्हें मोक्ष प्रदान किया जा सके। तीर्थयात्री अनुष्ठान करने, पवित्र स्नान करने और आशीर्वाद लेने के लिए नदी के किनारे आते हैं। यह विचार कि नदियाँ पापों को धोती हैं और मोक्ष प्रदान करती हैं, लोगों और जल निकायों के बीच आध्यात्मिक सम्बंध को मज़बूत करता है।

भारत में कई प्रमुख तीर्थ स्थल नदियों के किनारे स्थित हैं। वाराणसी, हरिद्वार, प्रयागराज और ऋषिकेश जैसे शहर अपने आध्यात्मिक महत्त्व के लिए गंगा का आभार मानते हैं। दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक, कुम्भ मेला पवित्र नदियों के संगम

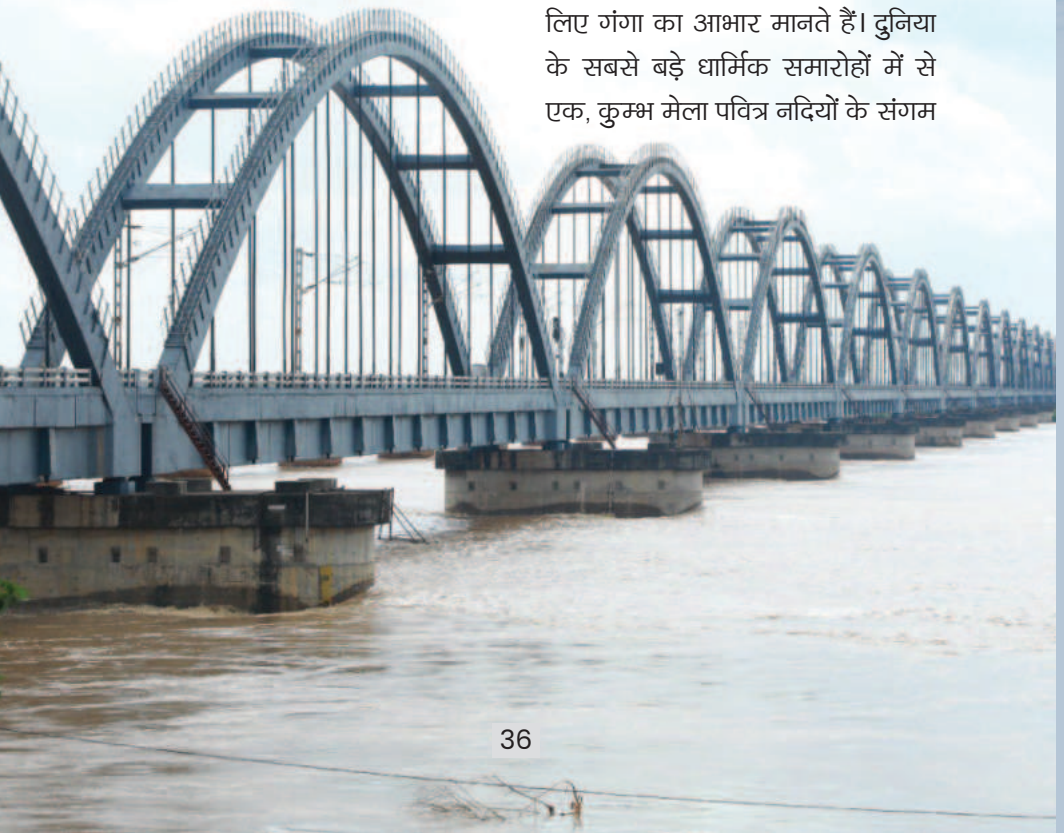

पर आयोजित किया जाता है, जिसमें आध्यात्मिक शुद्धि की तलाश में लाखों श्रद्धालु आते हैं। वाराणसी के घाटों पर दाह संस्कार और तटों पर प्रार्थना करने जैसे अनुष्ठान धार्मिक प्रथाओं में नदियों की अभिन्न भूमिका को दर्शाते हैं।

भारत में अनेक त्योहार जैसे सूर्य देव को समर्पित छठ पूजा, पुष्कर झील के तट पर आयोजित होने वाला पुष्कर मेला और कई अन्य त्योहार नदियों में और उनके आस-पास आयोजित किए जाते हैं, जो भारतीय परम्पराओं में उनके महत्त्व को दर्शाते हैं। ये त्योहार लोगों को आस्था और परम्परा के सामूहिक उत्सवों में एक साथ लाकर सामाजिक मेलजोल, सद्भाव और एकता को बढ़ाते हैं।

नदियों के प्रति श्रद्धा अपने साथ उनके संरक्षण के प्रति कर्तव्य की भावना भी लाती है। कई आध्यात्मिक गुरु और पर्यावरणविद् नदियों को प्रदूषण तथा क्षरण से बचाने की हिमायत करते हैं। नमामि गंगे परियोजना जैसे अभियान गंगा की पवित्रता को बहाल करने के उद्देश्य से हैं, जो इस बात पर ज़ोर देते हैं कि इन नदियों की देखभाल करना आध्यात्मिक और पारिस्थितिक जिम्मेदारी है। यह मान्यता कि नदियों को नुकसान पहुँचाना ईश्वर का अनादर करने के समान है, इन महत्त्वपूर्ण जल निकायों को संरक्षित करने के प्रयासों को बल देती है। भारत में नदियाँ केवल भौतिक अस्तित्व नहीं हैं; वे आध्यात्मिकता, संस्कृति और मानव जीवन को जोड़ने वाले सेतु हैं।

दिव्य नदियों

के किनारे आयोजित होने वाले त्योहार

"कुम्भ, पुष्करम और गंगा सागर मेला – हमारे ये पर्व हमारे सामाजिक मेलजोल को, सद्भाव को, एकता को बढ़ाने वाले पर्व हैं। ये पर्व भारत के लोगों को भारत की परम्पराओं से जोड़ते हैं और जैसे हमारे शास्त्रों ने संसार में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों पर बल दिया है, वैसे ही हमारे पर्व और परम्पराएँ – आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक हर पक्ष को भी सशक्त करते हैं।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

भारत में नदियों के इर्द-गिर्द मनाए जाने वाले त्योहारों का गहरा सांस्कृतिक, धार्मिक और पारिस्थितिक महत्त्व है। नदियों को पवित्र मानते हुए हिन्दू धर्म में उन्हें देवी स्वरूप माना जाता है और यह भी मान्यता है कि ये आत्मा को शुद्ध करती हैं और जीवन को बनाए रखती हैं। कई त्योहारों में नदियों का आभार व्यक्त किया जाता है, इनसे आशीर्वाद माँगा जाता है और इनके किनारे अनुष्ठान किया जाता है।

कुम्भ महोत्सव

12 साल के चक्र में चार बार आयोजित होने वाला कुम्भ मेला भारत के चार पवित्र स्थानों पर होता है- हरिद्वार में गंगा नदी पर, उज्जैन में शिप्रा नदी पर, नासिक में गोदावरी नदी के किनारे और प्रयागराज में गंगा नदी, यमुना नदी और पौराणिक सरस्वती के संगम पर।

पुष्करम महोत्सव

भारत में हर 12 साल में एक बार पुष्करम मनाया जाता है। यह 12 पवित्र नदियों की पूजा करने के लिए समर्पित है। ये नदियाँ हैं: गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, भीमा, ताप्ती, नर्मदा, सरस्वती, तुंगभद्रा, सिंधु और प्राणहिता।

गंगा सागर मेला

गंगासागर मेला भारत के पश्चिम बंगाल में सागर द्वीप पर गंगा नदी और बंगाल की खाड़ी के मिलन बिन्दु पर आयोजित किया जाने वाला एक वार्षिक हिन्दू त्योहार और तीर्थयात्रा है। कुम्भ मेले के बाद पवित्र संगम पर भक्तों का यह दूसरा सबसे बड़ा जमावड़ा है।

छठ पूजा

छठ पूजा एक प्राचीन हिन्दू त्योहार है। यह सूर्य देव और उनकी पत्नी उषा, जिन्हें छठी मैया के नाम से भी जाना जाता है, की पूजा के लिए समर्पित है। यह मुख्य रूप से भारत के बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश राज्यों के साथ-साथ नेपाल के मधेश क्षेत्र में मनाया जाता है।

गंगा दशहरा

गंगा दशहरा पवित्र नदी गंगा के स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण का उत्सव है। यह हिन्दू महीने ज्येष्ठ (मई-जून) में बढ़ते चंद्रमा के दसवें दिन (दशमी) मनाया जाता है। इसमें भक्त पवित्र गंगा में डुबकी लगाते है। उनका मानना है कि इससे पाप धुल जाते हैं और मोक्ष मिलता है।

अंतरिक्ष में उपग्रह डॉकिंग और पौधे उगाना

भारत की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

डॉ. वी. नारायणन
सचिव, अंतरिक्ष विभाग
अध्यक्ष, इसरो और अंतरिक्ष आयोग

भारत सरकार ने हाल ही में अमृत काल के दौरान भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक विस्तारित दृष्टिकोण की रूपरेखा तैयार की है। इसमें 2035 तक एक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और 2040 तक चंद्रमा पर भारतीय लैंडिंग की परिकल्पना की गई है। ऐसे जटिल और चुनौतीपूर्ण मिशनों को पूरा करने में एक अपरिहार्य तकनीक, अंतरिक्ष डॉकिंग के क्षेत्र में दक्षता है। बहुत व्यापक स्तर पर यह दो अलग-अलग अंतरिक्ष यानों को एक साथ लाने की क्षमता है, ताकि वे एक इकाई के रूप में कक्षा में बने रहें। ऐसी तकनीक में विशेषज्ञता एक समय में एक मिशन के लिए अंतरिक्ष बुनियादी ढाँचे के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती है।

अंतरिक्ष डॉकिंग निस्संदेह एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण प्रयास है, हालाँकि यह वीडियो में बहुत सरल लग सकता है। सराहनीय बात यह है कि डॉक किए जाने वाले दो अंतरिक्ष यान लगभग 27,000 किमी/घंटा की गति से यात्रा करेंगे। ये हर 90 मिनट में पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे, यहाँ तक कि छोटी-सी गलती भी डॉक करने के अवसर को खो सकती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि दो वस्तुओं को एक सीधी रेखा में लाने के विपरीत अंतरिक्ष यान की गति पूरी तरह से अलग होती है। तीन अक्षों के साथ गति युग्मित होती है और एक अक्ष में कोई भी अवशिष्ट गड़बड़ी दूसरे को प्रभावित करेगी। इसलिए एक-दूसरे के सम्बंध में अंतरिक्ष यान का संरेखण बहुत सख्त सहनशीलता के भीतर होना चाहिए। यह आवश्यक है कि दोनों अंतरिक्ष यान अपने वेग और प्रक्षेप पथ के सम्बंध में लगभग पूर्ण सामंजस्य में हों। इसलिए डॉक करने की क्षमता के लिए सभी प्रणालियों से बिना किसी त्रुटि के घड़ी की तरह सटीकता की आवश्यकता होती है।

डॉकिंग क्षमता के लिए इसरो की यात्रा स्पैडेक्स मिशन के साथ शुरू हुई। इसे अंतरिक्ष डॉकिंग क्षमता को उत्तरोत्तर विकसित करने के उद्देश्य से एक आधारभूत प्रदर्शन के रूप में माना गया था। प्रदर्शन के लिए सावधानीपूर्वक मिशन योजना और कई तकनीकों तथा कई सम्बंधित चुनौतियों का विकास आवश्यक था। स्पेसक्राफ्ट-ए (एसडीएक्स-01) और स्पेसक्राफ्ट-बी (एसडीएक्स-02) नामक SPADEX (स्पैडेक्स) अंतरिक्षयानों को, जिनमें से प्रत्येक का द्रव्यमान लगभग 220 किलोग्राम है, 30 दिसम्बर, 2024 को पीएसएलवी द्वारा प्रथम लॉन्च पैड, श्रीहरिकोटा से 55 डिग्री झुकाव पर 475 किमी की ऊँचाई की एक सटीक कक्षा में प्रक्षेपित किया गया।

डॉकिंग को पूरा करने के लिए मुख्य स्तम्भ सटीक नेविगेशन, उन्नत सेंसर और मार्गदर्शन प्रणाली तथा डॉकिंग सिस्टम हैं। ये सिस्टम यह सुनिश्चित करेंगे कि अंतरिक्ष यान पूरी तरह से संरेखित हों और डॉकिंग होने के लिए वास्तविक समय में दूरी को मापें। मिशन की योजना कई तरह के बिन्दुओं के साथ बनाई गई थी जहाँ अंतरिक्ष यान को पहले से निर्धारित दूरी पर एक साथ रखा गया था। अंतिम चरण के दौरान, कैप्चर किए जाने के बाद अंतरिक्ष यान को एक-दूसरे के और करीब लाया जाता है और फिर अंत में समग्र अंतरिक्ष यान का निर्माण होता है। डॉकिंग के प्रत्येक चरण में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा और प्रत्येक मुद्दे का सावधानीपूर्वक समाधान किया गया। अंतरिक्ष यान को 16 जनवरी 2025 को सफलतापूर्वक डॉक किया गया। इस प्रकार भारत इस जटिल तकनीक का प्रदर्शन करने वाले कुछ देशों में शामिल हो गया।

अंतरिक्ष में डॉकिंग प्रयोग का सफल प्रदर्शन स्वायत्त डॉकिंग के लिए एक अग्रदूत है और बीएएस के लिए अंतरिक्ष स्टेशनों के मॉड्यूल को इकट्ठा करने, इन स्टेशनों पर चालक दल तथा आपूर्ति पहुँचाने और चंद्रयान-4 के नमूनों को पृथ्वी की कक्षा में वापस लाने के लिए भारत के भविष्य के मिशनों के लिए महत्त्वपूर्ण है, जहाँ मॉड्यूल पृथ्वी के वायुमंडल का सामना करने के लिए

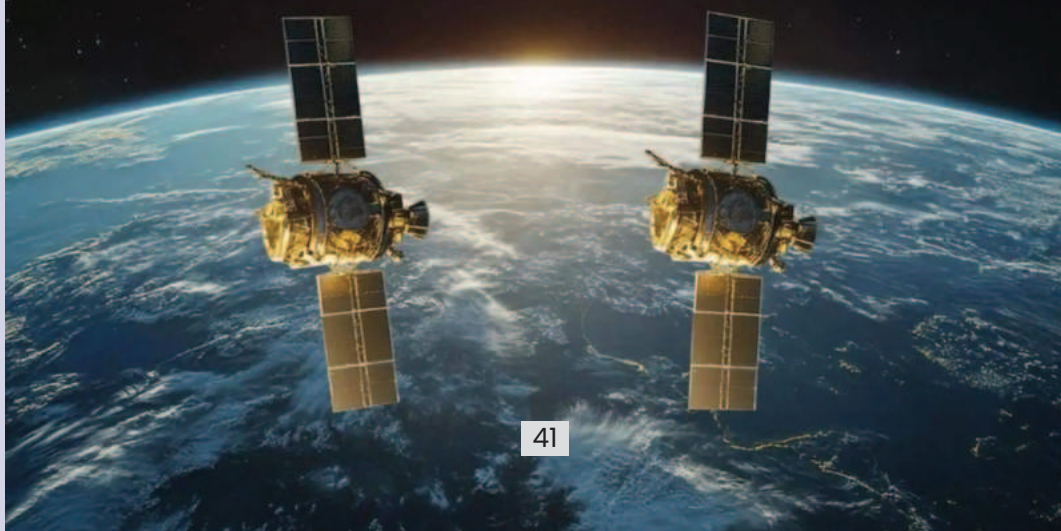

डिजाइन किए गए पुनः प्रवेश मॉड्यूल के साथ डॉक करेंगे।

नए अंतरिक्ष स्टेशन, चंद्र अड्डे और अंतरग्रहीय मानव अन्वेषण स्थापित करने की माँग करने वाले वैश्विक मिशनों के संदर्भ में आवश्यक डॉकिंग तकनीक हमारे देश को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष रुझानों के बराबर होने में सक्षम बनाएगी। इसने मिशन नियोजन में अधिक लचीलापन प्रदान किया है और साथ ही बहुत जटिल तथा चुनौतीपूर्ण मिशनों में सहयोग बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया है, जो क्षितिज का विस्तार करना जारी रखता है। ये जटिल प्रौद्योगिकी मिशन वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में उपग्रह सेवा, पुनः आपूर्ति मिशन और गहरे अंतरिक्ष अन्वेषण में विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करने और डॉकिंग प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों का विस्तार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय भागीदारी का लाभ उठाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

छोटी अवधि की मानव अंतरिक्ष उड़ानों के लिए चालक दल का भोजन और पानी पृथ्वी से ले जाया जाता है। हालाँकि लम्बी अवधि की उड़ानों के लिए, जैसे कि अंतरिक्ष स्टेशनों में, कक्षा में खाद्य सामग्री की खेती करना वांछनीय है। अंतरग्रहीय मिशनों के लिए अपना भोजन बनाना एक परम आवश्यकता है, क्योंकि जमीन से पुनःपूर्ति व्यावहारिक नहीं है। अंतरिक्ष में पौधे उगाने पर इसरो द्वारा अंतरिक्ष में किए गए प्रयोगों के सम्बंध में एक बड़ी सफलता इसरो के पीएसएलवी-सी60 में हासिल की गई थी। इस विशिष्ट प्रयोग में, जिसे उपयुक्त रूप से 'ऑर्बिटल प्लांट स्टडीज (क्रॉप्स) के लिए कॉम्पैक्ट रिसर्च मॉड्यूल' शीर्षक दिया गया है, इसरो ने अंतरिक्ष में बीज के अंकुरण, पौधे की वृद्धि और उसके पोषण का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया है।

क्रॉप्स मॉड्यूल को पूरी तरह से स्वचालित प्रणाली के रूप में डिजाइन किया गया था और इसे पीएसएलवी पीएस4 ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंटल मॉड्यूल (पीओईएम) में समायोजित किया गया था। क्रॉप्स के प्रथम चरण के रूप में, पीओईएम में 5 से 7 दिन का प्रयोग किया गया, जिसमें सूक्ष्म गुरुत्व वातावरण में बीज अंकुरण और दो पत्ती अवस्था तक पौधे के पोषण को प्रदर्शित किया गया। प्रयोग में सक्रिय तापीय नियंत्रण के साथ एक बंद बॉक्स वातावरण में लोबिया के 8 बीज उगाने की परिकल्पना की गई

थी। लोबिया (विग्ना अनगुइकुलाटा) का चयन इसलिए किया गया, क्योंकि इसमें 25 प्रतिशत प्रोटीन, कई विटामिन और खनिज होते हैं। यह तेजी से बढ़ने वाली, सूखी-सहिष्णु फलीदार फसल है, जो विभिन्न प्रकार की मिट्टी में पनप सकती है और खाद्य पदार्थ बनाने में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। कैमरा इमेजिंग, ओ2 और सीओ2 सांद्रता, आरएच, तापमान, मिट्टी की नमी की निगरानी सहित विभिन्न मापन भी मॉड्यूल में बनाए गए थे। तापमान तथा दबाव स्वचालित रूप से मॉड्यूल के भीतर बनाए रखा गया था और लगातार अंतराल पर मिट्टी में पानी की एक मापी गई मात्रा डाली गई थी। प्रयोग के चौथे दिन बीज का अंकुरण देखा गया। बाद की छवियों में हरी पत्तियाँ उगती दिखाई दीं, जो प्रकाश संश्लेषण की सफल शुरुआत का संकेत था। इसकी उपज और विकास पर अंतरिक्ष वातावरण के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा रहा है।

जैसे-जैसे हम अपना भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की ओर बढ़ रहे हैं, इन-सीटू प्लांट कल्टीवेशन एक जटिल तकनीक है, जिसमें हमें महारत हासिल करने की आवश्यकता है। जहाज पर खाद्य उत्पादन होने से चालक दल के सदस्यों को पृथ्वी पर अपनी निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी। जहाज पर पौधों की खेती के कई अन्य लाभ भी हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड का उपभोग करते हैं और प्रकाश संश्लेषण के कारण ऑक्सीजन छोड़ते हैं, इस प्रक्रिया में आर्द्रता को भी नियंत्रित करते हैं। ये प्रक्रियाएँ केबिन के वातावरण को प्रबंधित करने में मदद करती हैं। इसके अलावा, अंतरिक्ष आवासों में हरे पौधे होने से बहुत बेहतर माहौल बनता है और अंतरिक्ष उड़ान के सभी चरणों के दौरान चालक दल पर बहुत सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की छलाँग

भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र अभूतपूर्व नवाचारों और सक्षम निजी पारिस्थितिकी तंत्र की बदौलत, अभूतपूर्व ऊँचाइयों को छू रहा है। भारत के पहले निजी हाइपरस्पेक्ट्रल उपग्रह समूह, पिक्सल के 'फायरफ्लाई' के सफल प्रक्षेपण से लेकर अंतरिक्ष डॉकिंग में इसरो की उल्लेखनीय उपलब्धि और पृथ्वी से दूर अंतरिक्ष में पौधे उगाने के प्रयोगों तक, देश तेजी से वैश्विक अंतरिक्ष-तकनीक में अग्रणी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर रहा है। आईआईटी मद्रास का **ExTem** केंद्र इस दक्षता को और बढ़ाते हुए, अंतरिक्ष मिशनों के लिए भविष्य की विनिर्माण प्रौद्योगिकी में अग्रणी की भूमिका निभा रहा है। ये प्रगति न केवल वैज्ञानिक प्रगति में मील का पत्थर है बल्कि अंतरिक्ष अन्वेषण में आत्मनिर्भरता और नवाचार के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण भी है।

> मित्रो, ये सभी उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारत के वैज्ञानिक और इनोवेटर्स भविष्य की चुनौतियों का समाधान देने के लिए कितने विजनरी हैं। हमारा देश आज स्पेस टेक्नालॉजी में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। मैं भारत के वैज्ञानिकों, इनोवेटर्स और युवा उद्यमियों को पूरे देश की ओर से शुभकामनाएँ देता हूँ।
>
> - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
> ('मन की बात' सम्बोधन में)

> फायरफ्लाइज की खास बात यह है कि वे दुनिया के सबसे उच्च रिजॉल्यूशन वाले हाइपरस्पेक्ट्रल उपग्रह हैं। हाइपरस्पेक्ट्रल डेटा हमें सामान्य उपग्रहों की तुलना में प्रति छवि 50 गुना अधिक विस्तृत विवरण में चीजों को देखने में सक्षम बनाता है। उदाहरण के लिए यदि आप किसी कृषि भूमि को देख रहे हैं, तो आप न केवल यह पहचान पाएँगे कि यह एक खेत है, बल्कि यह भी पहचान पाएँगे कि इसकी मिट्टी में पोषक तत्व क्या हैं और क्या कोई फसल रोग या कीट संक्रमण है।
>
> - अवैस अहमद, संस्थापक और सीईओ, पिक्सल स्पेस

> अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के बारे में एक अच्छी बात यह है कि आप वास्तव में बहुत अलग तरीके से सोचते हैं। पृथ्वी पर प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए सभी संसाधन हमारे आस-पास हैं, जैसे पानी और अन्य सामग्री, लेकिन अंतरिक्ष में सीमाएँ बहुत अलग हैं, जिसके लिए हमें अलग तरीके से सोचना होगा। उदाहरण के लिए हम नई तकनीकें विकसित करेंगे जिनके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं था।
>
> - डॉ. सत्यन सुब्बैया, प्रोफेसर, मेकैनिकल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी, मद्रास

भारत के टाइगर रिज़र्व
वन्यजीव संरक्षण की मिसाल

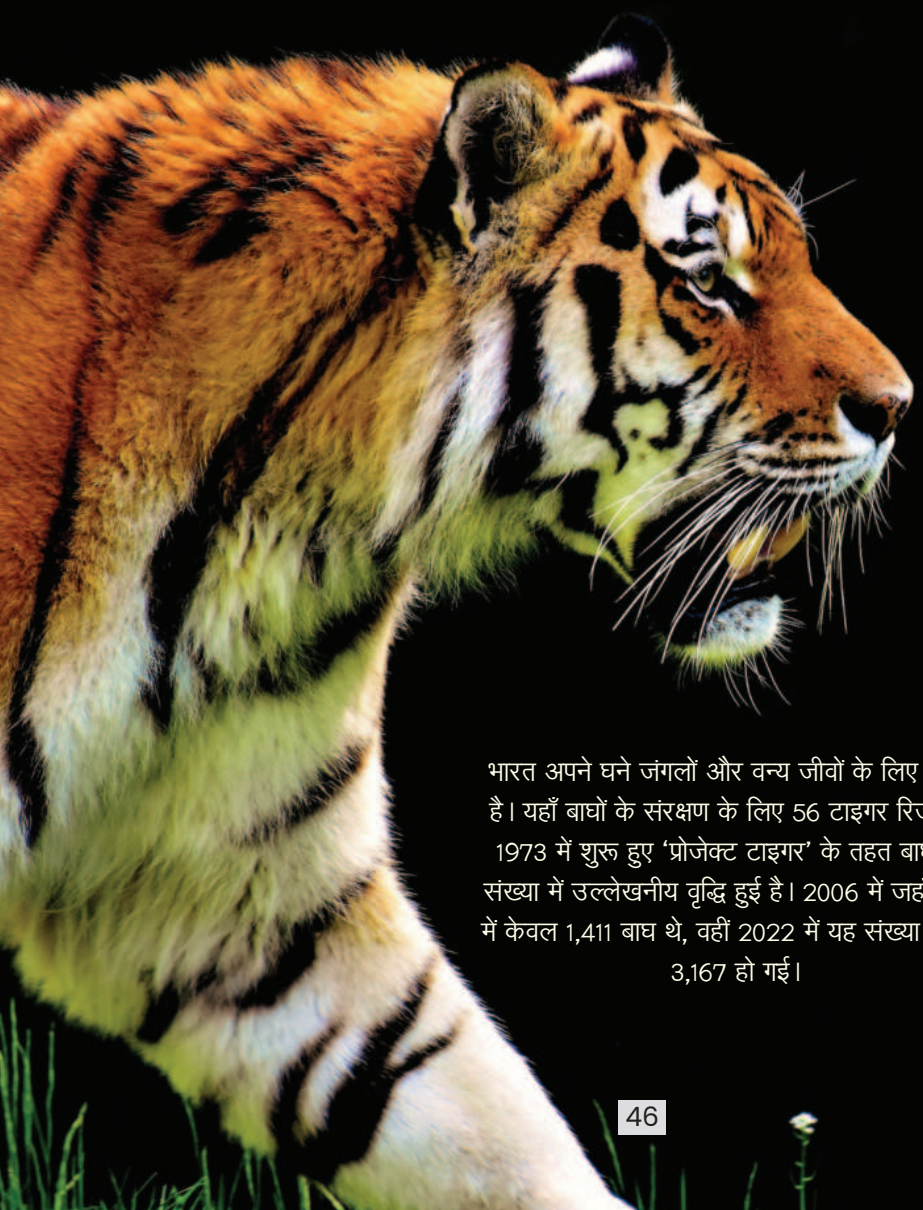

भारत अपने घने जंगलों और वन्य जीवों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ बाघों के संरक्षण के लिए 56 टाइगर रिज़र्व हैं। 1973 में शुरू हुए 'प्रोजेक्ट टाइगर' के तहत बाघों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2006 में जहाँ भारत में केवल 1,411 बाघ थे, वहीं 2022 में यह संख्या बढ़कर 3,167 हो गई।

हाल ही में गुरु घासीदास–तमोरपिंगला (छत्तीसगढ़) और रातापानी (मध्यप्रदेश) को नया टाइगर रिज़र्व घोषित किया गया है। घासीदास–तमोरपिंगला 2,829 वर्ग किमी में फैला है।

उत्तराखंड का जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क भारत का सबसे पुराना नेशनल पार्क है, जो 1936 में बना था। यहाँ की घनी हरियाली, बहती नदियाँ और पहाड़ बाघों के लिए बेहतरीन ठिकाना हैं। अगर आप खुश किस्मत हैं तो जंगल सफारी के दौरान यहाँ बाघों को खुले में घूमते हुए देख सकते हैं।

मध्य प्रदेश का कान्हा नेशनल पार्क बहुत मशहूर है। यही वो जंगल है जिसने रुडयार्ड किपलिंग को मशहूर किताब 'द जंगल बुक' की प्रेरणा दी थी। यहाँ के जंगलों में बाघ के अलावा हिरण, तेंदुए और जंगली कुत्ते भी देखे जा सकते हैं।

मध्य प्रदेश में ही बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व भी है जो सबसे ज़्यादा बाघों की संख्या के लिए जाना जाता है। यहाँ का जंगल पहाड़ियों और पुराने क़िलों से भरा है, जिससे इसका नज़ारा बेहद दिलचस्प बन जाता है।

ताडोबा-अंधारी टाइगर रिज़र्व महाराष्ट्र का सबसे पुराना और बड़ा टाइगर रिज़र्व है। इसे बाघों को देखने के लिए सबसे बेहतरीन जगह माना जाता है। यहाँ के जंगल सूखे और खुले होते हैं, इसलिए सफारी के दौरान बाघ आसानी से नज़र आ जाते हैं।

दक्षिण भारत में कर्नाटक का बांदीपुर टाइगर रिजर्व हाथियों और बाघों के लिए मशहूर है। यहाँ की हरियाली और शांत माहौल इसे खास बनाते हैं।

उत्तर-पूर्व भारत के असम राज्य में मानस नेशनल पार्क एक युनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट भी है। यहाँ बाघों के साथ-साथ हाथी और एक सींग वाले गैंडे भी मिलते हैं। मानस नदी के किनारे बसा यह जंगल अपनी अनोखी खूबसूरती के लिए मशहूर है।

प्रोजेक्ट टाइगर 1973 में शुरू हुआ था और आज यह एक बड़ी कामयाबी की इबारत लिख चुका है। दुनिया के 75% बाघ भारत में रहते हैं। सरकार और लोगों की कोशिशों के नतीजे में आज बाघों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

प्रकृति और प्रगति का संगम

असम के हाथी और निकोबार के नारियल बने बदलाव के प्रतीक

हमारी संस्कृति इंसान और प्रकृति के बीच संतुलन बनाने की सीख देती है। हम पर्यावरण और वन्यजीवों को केवल संसाधन नहीं बल्कि जीवन का अहम हिस्सा मानते हैं। यही भावना असम और अंडमान-निकोबार की प्रेरणादायक कहानियों में देखने को मिलती है जहाँ समुदायों ने मिलकर एक नई दिशा तय की है।

असम के नौगाँव में 'हाथी बंध' समूह ने किसानों और हाथियों के संघर्ष को हल किया है। उन्होंने 800 बीघा बंजर भूमि पर नेपियर घास उगाई, जिससे हाथियों को भोजन मिला और किसानों की फसलें भी बच गई। यह इंसान और वन्यजीवों के सह-अस्तित्व की बेहतरीन मिसाल है।

अंडमान-निकोबार में **Self Help Groups** महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रहे हैं। वर्जिन कोकोनट ऑयल को **GI** टैग मिलने के बाद महिलाएँ अपने उत्पादों को वैश्विक बाज़ार में पहुँचा रही हैं। ये प्रयास संरक्षण और सशक्तीकरण का उदाहरण हैं, जो सामूहिक प्रयासों की शक्ति को दर्शाते हैं।

एक रिमोट एरिया में हम लोग हाथियों के संरक्षण के साथ फसलों की रक्षा करने की कोशिश कर रहे हैं. इस पर भी प्रधानमंत्री की नज़र है। माननीय प्रधानमंत्री जी को हाथी बन्धु की तरफ से धन्यवाद। हाथियों के हैबिटैट का बहुत नुकसान हो चुका है। हाथियों और मानव के बीच संघर्ष कम करने की हाथी बन्धु की यह कोशिश पूरे भारतवर्ष के लिए एक मॉडल बन सकती है। हाथियों को हम लोग सुरक्षित रखेंगे तो अन्य जीव-जन्तु खुद-ब-खुद सुरक्षित रहेंगे।

बिनोद डुलु बोरा, फ़ील्ड डायरेक्टर, हाथी बन्धु

वर्जिन कोकोनट ऑयल में आदिवासी लोगों की आस्था है कि इससे हीलिंग होती है। अब यह मार्केट में जाएगा तो इसका प्रोडक्शन बढ़ जाएगा। अब इन्हें मालूम है कि इस तेल के खरीदार हैं। हमारा विश्वास है कि सरकार की मदद से हम इसे और आगे ले जाने में सफल होंगे। प्रधानमंत्री जी ने 'मन की बात' में इसके बारे में बात की, हम लोग बेहद खुश हैं। हमारी उम्मीद और बढ़ गई है कि हम ट्राइबल लोग भी अपने ट्रेडिशनल नॉलेज से कमा सकते हैं और अपनी फैमिली के लिए इनकम जेनरेट कर सकते हैं।

रशीद यूसुफ़, अध्यक्ष, ट्राइबल कौंसिल

स्टार्टअप इंडिया

बदलते उद्यमशील परिदृश्य के 9 वर्ष

"साथियो, कुछ दिन पहले ही StartUp इंडिया के 9 साल पूरे हुए हैं। हमारे देश में जितने StartUps 9 साल में बने हैं, उनमें से आधे से ज्यादा Tier 2 और Tier 3 शहरों से हैं, और जब यह सुनते हैं तो हर हिन्दुस्तानी का दिल खुश हो जाता है यानी हमारा StartUp Culture बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं है।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"यह समय भारत का है। यह समय केवल बड़े शहरों के लिए नहीं, केवल पुरुषों के लिए नहीं, केवल विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए नहीं, यह समय उन सभी लोगों के लिए है जिनके पास कोई आइडिया है और उसे आगे बढ़ाने का साहस है। मेरे हिसाब से यही स्टार्ट-अप इंडिया की सच्ची भावना है।"

– निखिल कामथ
निवेशक और उद्यमी

35 वर्ष से कम आयु की 65 प्रतिशत आबादी वाले देश - भारत को, उद्यमशीलता की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए एक संगठित प्लेटफॉर्म की आवश्यकता थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त, 2015 को 'स्टार्टअप इंडिया' पहल की घोषणा की, जिसे औपचारिक रूप से 16 जनवरी, 2016 को शुरू किया गया। उनकी परिकल्पना नौकरी चाहने वालों को नौकरी प्रदाता बनाना था। उनकी इस परिकल्पना ने भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम को बदल दिया है। आज भारत में 1.5 लाख से अधिक स्टार्टअप और 118 से अधिक यूनिकॉर्न हैं।

भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का विकास

स्टार्टअप इंडिया की सफलता रणनीतिक नीतियों से उपजी है, जो वित्तीय सहायता, कर छूट, मुद्रा ऋण योजना (20 लाख रुपये तक) और एक लाख करोड़ रुपये के अनुसंधान कोष जैसे वित्तपोषण के अवसर प्रदान करती हैं। यह इकोसिस्टम महानगरों से आगे बढ़कर 600 से अधिक जिलों तक पहुँच गया और इसने कृषि, कपड़ा, चिकित्सा, परिवहन तथा अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में अपना दखल बढ़ाया।

भारत 2014 में मात्र 500 स्टार्टअप से बहुत आगे बढ़कर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन गया है। उसकी इस प्रगति को मान्यता देने के लिए 16 जनवरी, 2022 को राष्ट्रीय स्टार्टअप दिवस मनाने की शुरुआत की गई। स्टार्टअप-20 के माध्यम से भारत की वैश्विक स्थिति को और मज़बूत किया गया, जो वैश्विक स्टार्टअप क्षेत्र में भारत की उपस्थिति को बढ़ाने के लिए गठित एक समर्पित जी-20 समूह है। एक उल्लेखनीय उपलब्धि भारत की उदारीकृत अंतरिक्ष नीति के तहत एक निजी रॉकेट का सफल प्रक्षेपण है, जो नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

विकसित भारत के स्तम्भ के रूप में स्टार्टअप

स्टार्टअप ने न केवल आर्थिक विकास को गति दी है, बल्कि 2047 तक भारत के विकसित राष्ट्र बनने की महत्त्वाकांक्षा में भी योगदान दिया है। IDEX (रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार) जैसी पहलों ने पिछले दशक में भारत के रक्षा निर्यात को 30 प्रतिशत तक बढ़ाने वाले लगभग 1,000 रक्षा स्टार्टअप की स्थापना की है। इसी तरह आयुष क्षेत्र, जिसका मूल्य 2014 में 3 बिलियन डॉलर था, बढ़कर 24 बिलियन डॉलर हो गया है। इसमें 1,250 से अधिक स्टार्टअप इस वृद्धि में योगदान दे रहे हैं।

मुद्रा योजना जैसे कार्यक्रमों ने 8 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को व्यवसाय शुरू करने के लिए सशक्त बनाया है, जिससे रोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। मुट्ठी भर स्टार्टअप से लेकर 1,54,000 से अधिक स्टार्टअप वाले सम्पन्न पारिस्थितिकी तंत्र तक की यात्रा, सरकारी पहलों द्वारा सक्षम परिवर्तन को रेखांकित करती है।

महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप

'महिला क्षमता विकास' कार्यक्रम, अनुकूल शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देकर और सर्वोत्तम प्रथाओं तथा अनुभवों के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करके महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप की सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, पूर्वोत्तर क्षेत्र के उद्यमियों और विद्यार्थियों के लिए स्टार्टअप कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की गई है, जिसमें महिला उद्यमियों पर विशेष जोर दिया गया है। भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम में महिलाओं की भागीदारी को और

बढ़ावा देने के लिए, 'सुपर स्त्री' वीडियो पॉडकास्ट श्रृंखला भी शुरू की गई है, जो महिला उद्यमिता की नींव को मज़बूत करती है।

यूनिकॉर्न का उदय

मई, 2022 में भारत में यूनिकॉर्न की संख्या 100 पर पहुँच गई, जिनकी कीमत 330 बिलियन डॉलर (25 लाख करोड़ रुपये) से अधिक थी। ये यूनिकॉर्न ई-कॉमर्स, फिनटेक, एडुटेक और बायोटेक सहित विविध क्षेत्रों में फैले हुए हैं। इस गति को बनाए रखने के लिए अटल टिंकरिंग लैब्स ने 75 लाख से अधिक विद्यार्थियों को अत्याधुनिक तकनीकों में प्रशिक्षित किया है, जिससे नवोन्मेषकों की एक नई पीढ़ी का पोषण हुआ है।

एस्सैण्ड के माध्यम से पूर्वोत्तर को सशक्त बनाना

पूर्वोत्तर भारत में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए 'एक्सेलेरेटिंग स्टार्टअप कैलिबर एंड एंटरप्रेन्योरियल ड्राइव' (ASCENT) की शुरुआत की गई थी। 'MAARG' (मेंटरशिप, एडवाइजरी, असिस्टेंस, रेजिलिएंस एंड ग्रोथ) मेंटरशिप प्रोग्राम ने 190 घंटे से अधिक मास्टरक्लास की पेशकश की, जिससे मार्केटिंग और व्यावसायिक कौशल में वृद्धि हुई। एस्सैण्ड स्टार्टअप वेबिनार ने DPIIT मान्यता, कर छूट, सीड फंडिंग, बौद्धिक सम्पदा अधिकार और सरकारी प्लेटफॉर्म जैसे विषयों पर जरूरी जानकारी प्रसारित करने के लिए मेंटरशिप प्रदान की, जिससे पूर्वोत्तर राज्यों में एक मज़बूत स्टार्टअप इकोसिस्टम बनाने, स्थानीय प्रतिभाओं को सशक्त करने और नवाचार से प्रेरित विकास को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला। इन प्रयासों ने इस क्षेत्र में स्टार्टअप इकोसिस्टम को काफी मज़बूत किया है, स्थानीय प्रतिभाओं को सशक्त बनाया है और नवाचार को बढ़ावा दिया है।

दूरदर्शी नीतियों, वित्तीय प्रोत्साहनों और सक्षम नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा संचालित भारत की स्टार्टअप क्रांति एक गतिशील आर्थिक और तकनीकी भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रही है। डिजिटल परिवर्तन, कौशल विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर जोर देने के साथ, राष्ट्र एक स्टार्टअप पावरहाउस के रूप में लगातार उभर रहा है। जैसे-जैसे भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, इसके स्टार्टअप इस उल्लेखनीय यात्रा के केंद्र में होंगे– विकास को गति देंगे, उद्योगों को आकार देंगे और अगली पीढ़ी के नवप्रवर्तकों को प्रेरित करेंगे।

स्टार्ट-अप इंडिया के 9 वर्ष

छोटे शहरों का सशक्तीकरण और साहसिक मंसूबे

निखिल कामथ
निवेशक और उद्यमी

आइए, भारत में उद्यमिता की स्थिति का अवलोकन करें। एक नई गाथा हमारे सामने है। इतना ही नहीं, यह गाथा उस कहानी से बिलकुल अलग है, जिसे देखते-सुनते हम बड़े हुए हैं। 80 और 90 के दशक में जोखिम उठाने का मतलब था रोजगार की सुरक्षा वाली सरकारी नौकरी पाना या इंजीनियरिंग और चिकित्सा जैसे करियर का चयन करना। आगे बढ़कर कुछ भी करना बिना लाइफ जैकेट के गहरे पानी में गोता लगाने जैसा प्रतीत होता था।

यदि आज की बात करें तो हमारे चारों ओर एक ऐसी पीढ़ी मौजूद है, जो सिर्फ गोता ही नहीं लगाती, बल्कि वह तैरते समय पूल बना रही है। स्टार्ट-अप इंडिया की 9वीं वर्षगाँठ सिर्फ एक मील का पत्थर नहीं है, यह इस बात का प्रमाण है कि हमने एक लम्बी दूरी तय की है। अब हम केवल पश्चिमी देशों की अवधारणाओं को अपनाने वाले देश नहीं रह गए हैं। युवा भारत आगे बढ़ रहा है, पूरी विशिष्टताओं के साथ देश की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है और ऐसे समाधान बना रहा है, जिनसे दुनिया सीख सकती है।

हम डब्ल्यूटीफंड (WTFund) के डेटा पर गौर करते हैं। इसे अपने पहले दो समूहों में लगभग 4,000 आवेदन प्राप्त हुए थे। औसतन आवेदकों की उम्र 22.5 वर्ष पाई गई। कुछ की आयु 16 वर्ष है। ये बच्चे केवल बैंगलुरु, मुम्बई या दिल्ली में ही नहीं, बल्कि अम्बाला, हिसार, कांगड़ा और बिलासपुर जैसे शहरों में भी कम्पनियाँ शुरू कर रहे हैं। लगभग 35 प्रतिशत आवेदन टियर 2 और टियर 3 शहरों से आए हैं। यह अब केवल महानगरों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन है।

अब हम समाज के उस हिस्से की बात करते हैं, जो सचमुच उल्लेखनीय है। छोटे शहरों में इन स्टार्टअप में से आधे

से अधिक का नेतृत्व महिलाओं के हाथों में है। यह केवल प्रगति नहीं है, यह एक क्रांति है। हम देख रहे हैं कि महिलाएँ न केवल इसमें भागीदारी कर रही हैं, बल्कि अपशिष्ट प्रबंधन, जैव प्रौद्योगिकी और लॉजिस्टिक जैसे क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं। यह सभी ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें कभी पुरुष-प्रधान माना जाता था। अब उन्हें किसी की अनुमति की प्रतीक्षा नहीं है, वे खुद ही अपना एजेंडा तय कर रहे हैं।

ज्ञान का अब लोकतंत्रीकरण हो गया है। यदि आप अपनी कम्पनी बनाना चाहते हैं तो उसका काम सीखने के लिए आपको सिलिकॉन वैली में रहने की ज़रूरत नहीं है। इंटरनेट ने सीखने की प्रक्रिया को आसान बना दिया है और पहले की तुलना में युवा भारतीय इसका कहीं अधिक लाभ उठा रहे हैं। उद्यमी नए हीरो हैं, इसलिए नहीं कि वे सूट पहनते हैं या लाखों अर्जित करते हैं, बल्कि इसलिए कि वे अपने मंसूबे पालने और उन्हें ऐसे तरीके से लागू करने की हिम्मत रखते हैं, जो सीधे तौर पर लोगों के जीवन को प्रभावित करता है।

इससे भी अधिक दिलचस्प है मानसिकता में बदलाव। डब्ल्यूटीफंड के 60 प्रतिशत से अधिक आवेदक अपने स्टार्टअप पर पूर्णकालिक तौर पर काम कर रहे हैं। कई लोगों ने कॉलेज में रहते हुए ही शुरुआत की, फैकल्टी मेंटर से लेकर कॉलेज इनक्यूबेटर तक सबका लाभ उठाया। कुछ लोगों ने तो अन्यत्र रोज़गार पाने की इच्छा भी छोड़ दी, क्योंकि उन्हें नियमित तनख्वाह की सुरक्षा से कहीं अधिक अपने खुद के विचारों पर भरोसा था। इसके लिए हिम्मत की ज़रूरत होती है।

स्टार्टअप बराबरी लाने वाले बन गए हैं। उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि आपने कॉलेज कहाँ से किया या आपने कॉलेज किया भी या नहीं। जीत योग्यता की होती है, साख की नहीं। युवा भारत

के पास अब पूँजी, प्रतिभा और ज्ञान सब कुछ है, जो कभी महज कुछ खास लोगों के लिए आरक्षित था। पहले जो बाधाएँ हुआ करती थीं, वे अब दूर हो रही हैं– चाहे वे भौगोलिक, शिक्षा या सामाजिक प्रतिष्ठा पर आधारित हों। अगर आपके पास कोई आइडिया है और उसे पूरा करने का दृढ़ संकल्प है, तो सभी के लिए समान अवसर पहले कभी नहीं होता था।

भारत की स्टार्टअप गाथा पश्चिमी देशों के मॉडल की नकल बिल्कुल नहीं है। यह ऐसे समाधान तैयार करने के बारे में है, जो विशिष्ट रूप से भारतीय हैं। चाहे वह भारत के लिए स्थानीय समस्या का समाधान ढूँढना हो, पालतू जीवों के लिए टिकाऊ आहार तैयार करना हो, या फिर डीएनए स्टोरेज तकनीक में अग्रणी होना हो, युवा उद्यमी यह साबित करने में सक्षम हैं कि नवाचार का कोई पिन कोड नहीं होता।

क्या आप इसे पढ़कर आश्चर्यचकित हो रहे हैं? क्या यह सोच रहे हैं कि आप जिस आइडिया को लेकर बैठे हैं, उसे शुरू करना चाहिए या नहीं। ऐसे में मेरे विचार से आपके लिए कुछ सलाह महत्त्वपूर्ण होगी। सही समय आने का इंतजार न करें। सही समय जैसा कुछ नहीं होता। जोखिम उठाइए। निर्माण करें, असफल हों, निरंतर सीखें और यह पूरा हो सकता है, बस हो सकता है, आप कुछ ऐसा बना लें, जो न केवल आपका जीवन बदल दे, बल्कि किसी और को भी अपनी ऊँची छलाँग लगाने के लिए प्रेरित करे।

यह समय भारत का है। यह समय केवल बड़े शहरों के लिए नहीं, केवल पुरुषों के लिए नहीं, केवल विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए नहीं, यह समय उन सभी लोगों के लिए है जिनके पास कोई आइडिया है और उसे आगे बढ़ाने का साहस है। मेरे हिसाब से यही स्टार्ट-अप इंडिया की सच्ची भावना है।

सशक्त यूनिकॉर्न

#startupindia

यूनिकॉर्न स्टार्टअप निजी स्वामित्व वाली कम्पनी होती है जिसका मूल्यांकन एक बिलियन डॉलर से अधिक है। भारत सरकार की स्टार्टअप इंडिया पहल के तहत ये स्टार्टअप कर छूट, फंडिंग सहायता और मेंटरशिप जैसे लाभों के माध्यम से फले-फूले हैं। इस पहल ने 2016 में इसकी शुरुआत के बाद से देश को 100 से अधिक यूनिकॉर्न के साथ दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बनने के लिए प्रेरित किया है।

क्या आप जानते हैं?

भारत में स्टार्टअप क्रांति

प्रधानमंत्री ने इस महीने 'मन की बात' में उल्लेख किया है कि भारत की स्टार्टअप संस्कृति प्रमुख शहरों से आगे बढ़ गई है, जिससे अम्बाला, हिसार और ग्वालियर जैसे टियर 2 और टियर 3 शहर इसके सफल केंद्र बन गए हैं।

ज़ोमैटो

तकनीकी नवाचार के माध्यम से खाद्य वितरण में क्रान्तिकारी परिवर्तन और नए रेस्तरां की खोज।

अनएकेडमी

लाखों लोगों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुलभ बनाकर ऑनलाइन शिक्षा में क्रांति, जिससे विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने में मदद मिली।

ओला

राइड/शेयरिंग और इलेक्ट्रिक वाहन उपक्रमों के माध्यम से शहरी गतिशीलता को फिर से परिभाषित किया।

लेंसकार्ट

ऑनलाइन तथा ऑफलाइन मॉडल और एआर तकनीक के साथ आईवियर रिटेल का आधुनिकीकरण।

भारतपे

व्यापारियों के लिए भारत का पहला यूपीआई क्यूआर कोड लॉन्च किया गया, जिससे छोटे व्यवसायों को आसान क्रेडिट एक्सेस और डिजिटल भुगतान के साथ सशक्त बनाया गया, इससे उनकी तरक्की को बढ़ावा मिला।

नायका

2020 में नायका एक महिला के नेतृत्व में पहला भारतीय यूनिकॉर्न स्टार्ट-अप बना, जिसने सफलतापूर्वक इनीशियल पब्लिक ऑफर (आईपीओ) लॉन्च किया। तब से नायका ने मजबूत ई-कॉमर्स उपस्थिति के साथ ब्यूटी और वेलनेस क्षेत्र पर अपना दबदबा बनाया है।

फ्रेशवर्क्स

कम्पनियों को हेल्प डेस्क या कस्टमर सर्विस प्रदान करते हुए SAAS 'सास' यानी साफ्टवेयर ऐज़ ए सर्विस में विश्व में अग्रणी।

मीशो

टियर 2 और टियर 3 शहरों के लिए एक मज़बूत ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म बनाकर छोटे विक्रेताओं को सशक्त बनाया।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

औपनिवेशिक शासन के खिलाफ मुखर आवाज़

“23 जनवरी यानी उनकी जन्मजयंती को अब हम ‘पराक्रम दिवस’ के रूप में मनाते हैं। उनके शौर्य से जुड़ी इस गाथा में भी उनके पराक्रम की झलक मिलती है... सुभाष बाबू एक विजनरी थे। साहस तो उनके स्वभाव में रचा-बसा था... देश भर के लोगों से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक-से-अधिक पढ़ें और उनके जीवन से निरंतर प्रेरणा लें।”

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में सुभाष चंद्र बोस की बहादुरी की तस्वीर प्रस्तुत की। नेताजी का व्यक्तित्व ऐसा था कि वे किसी फिल्म के हीरो की तरह दिखते थे। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक नेताजी को भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त करने के लिए उनकी साहसिक रणनीतियों और अडिग दृढ़ संकल्प के लिए जाना जाता है। उनके प्रयास बहुआयामी थे और उनकी पहल पारम्परिक राजनीतिक सक्रियता से परे थी, जिसने स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए महत्त्वपूर्ण तरीके से रणनीति अपनाई। बच्चों के लिए स्कूल तथा गरीब शिशुओं के लिए दूध की व्यवस्था और स्वच्छता से सम्बंधित उनके प्रयास स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान उनके दूरदर्शी नेतृत्व के उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

आज़ाद हिन्द रेडियो : क्रांति की आवाज़

सुभाष चंद्र बोस के सबसे अभिनव योगदानों में से एक, 1942 में ‘आज़ाद हिन्द रेडियो’ की स्थापना थी। वे इस दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) का नेतृत्व कर रहे थे। यह रेडियो स्टेशन राष्ट्रवादी विचारों को

फैलाने और स्वतंत्रता के लिए लोगों को एकजुट करने का एक शक्तिशाली साधन बन गया। दक्षिण-पूर्व एशिया में जापान-नियंत्रित क्षेत्रों से प्रसारित, आज़ाद हिन्द रेडियो का उद्देश्य भारतीय सैनिकों, नागरिकों और देशभक्तों को उपनिवेशवाद विरोधी बयानबाजी से प्रेरित करना और ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का आह्वान करना था। इस रेडियो स्टेशन ने अपने प्रसारणों के माध्यम से, भारतीयों को आई.एन.ए. में शामिल होने और स्वतंत्रता के संघर्ष में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

सुभाष चंद्र बोस ने स्वयं कई प्रसारण किए, जिनमें उन्होंने न केवल प्रवासी भारतीयों को सम्बोधित किया बल्कि ब्रिटिश कमांड के तहत भारतीय सैनिकों को भी सम्बोधित किया और उनसे उपनिवेशवादियों के खिलाफ खड़े होने का आग्रह किया। रेडियो ने भारतीय राष्ट्रीय सेना और सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व से सम्बंधित समाचारों और घटनाओं को प्रसारित करने के लिए एक मंच के रूप में भी काम किया, जिसने प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में उनकी उपस्थिति स्थापित की। जनसंचार की शक्ति का लाभ उठाकर, ‘आज़ाद हिन्द रेडियो’ नागरिकों और सशस्त्र बलों को प्रेरित करने और उन्हें संगठित करने के बोस के प्रयासों का एक अभिन्न अंग बन गया।

कोलकाता मेयर : जनता के हितों का हिमायती

भारतीय राष्ट्रीय सेना के साथ जुड़ने और अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रमुखता हासिल करने से पहले सुभाष चंद्र बोस

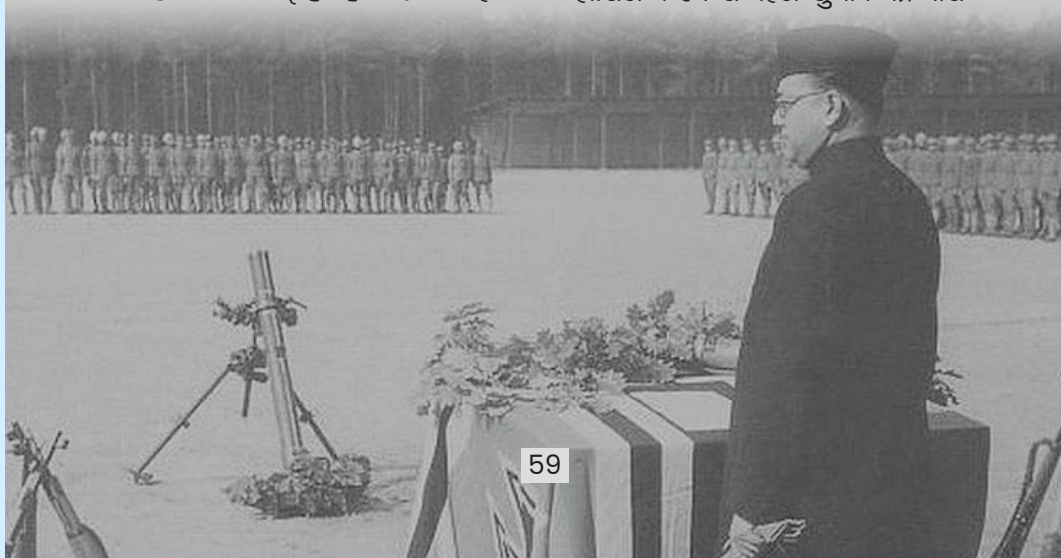

ने कोलकाता के राजनीतिक परिदृश्य में अपनी पहचान बनाई। 1930 में उन्हें कोलकाता का मेयर चुना गया। यह एक ऐसा पद था जिसने उन्हें शहर के जरूरी सामाजिक मुद्दों का समाधान करने का मौका दिया। मेयर के रूप में उनका कार्यकाल छोटा, लेकिन प्रभावशाली रहा। सुभाष चंद्र बोस ने मजदूर वर्ग और समाज के वंचित वर्गों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और बुनियादी ढाँचे में सुधार के लिए पर्याप्त प्रयास किए।

सुभाष चंद्र बोस ने मेयर के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान शैक्षिक सुधारों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और नगरपालिका नियंत्रण के तहत स्कूलों और संस्थानों की बेहतरी की दिशा में काम किया। उनके नेतृत्व की विशेषता एक ऐसी दृष्टि थी जो सामाजिक कल्याण पर ज़ोर देती थी। उन्होंने स्थानीय शासन में प्रगतिशील विचारों के समावेशन का प्रयास किया। राष्ट्रवादी आंदोलनों के समर्थक होने के बावजूद मेयर के रूप में उनका कार्यकाल व्यावहारिक था और आम लोगों की दिन-प्रतिदिन की ज़रूरतों के प्रति उनकी गहरी चिंता को दर्शाता था, जिसने उन्हें कोलकाता की जनता के बीच लोकप्रिय बना दिया।

राष्ट्रीय योजना समिति : आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए एक दृष्टिकोण

सुभाष चंद्र बोस द्वारा की गई एक और महत्त्वपूर्ण पहल 1938 में राष्ट्रीय योजना समिति (एनपीसी) के गठन में उनकी भागीदारी थी, जब वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। एनपीसी एक महत्त्वाकांक्षी आर्थिक परियोजना थी जिसका उद्देश्य स्वतंत्र और आत्मनिर्भर भारत की नींव रखना था। बोस के मार्गदर्शन में समिति ने स्वतंत्रता के बाद देश की औद्योगिक, कृषि सम्बंधी और सामाजिक जरूरतों को पूरा करने वाली व्यापक आर्थिक योजना विकसित करने की कोशिश की। एनपीसी ने औद्योगीकरण, आधुनिक शिक्षा प्रणाली के निर्माण और धन के समान वितरण पर आधारित नीतियों के लिए विचार प्रस्तावित किए। सुभाष चंद्र बोस ने समाजवादी और राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरणा लेते हुए भारत को अंग्रेज़ों के आर्थिक शोषण से मुक्त करने की परिकल्पना की। उनका मानना था कि

आर्थिक स्वायत्तता के बिना भारत की स्वतंत्रता अधूरी है। राष्ट्रीय योजना समिति के काम ने कई आर्थिक नीतियों के लिए आधार तैयार किया, जिन्हें स्वतंत्रता के बाद अपनाया गया। हालाँकि 1939 में कांग्रेस नेतृत्व से बोस के इस्तीफे के बाद समिति को भंग कर दिया गया था।

भारतीय सेना : स्वतंत्रता के लिए सशस्त्र संघर्ष

भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में शायद सुभाष चंद्र बोस के सबसे साहसी कदमों में से एक 'भारतीय सेना' (जिसे 'आज़ाद हिन्द सेना' के रूप में भी जाना जाता है) का गठन था। 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान धुरी शक्तियों से सहयोग माँगते हुए उन्होंने नाजी जर्मनी को भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में सहयोग करने के लिए राज़ी किया। भारतीय सेना, जो शुरू में उत्तरी अफ्रीका में जर्मनी द्वारा पकड़े गए भारतीय युद्धबंदियों से बनी थी, की स्थापना एक सैन्य बल के आयोजन के लिए की गई थी जो भारत की मुक्ति में सहायता करे। सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में भारतीय सेना को ब्रिटिश सेनाओं के खिलाफ लड़ने के लिए प्रशिक्षित और संगठित किया गया था। हालाँकि अपने शुरुआती दिनों में इस सेना ने कभी बड़ी युद्धक कार्रवाई नहीं की, लेकिन यह बोस के स्वतंत्रता प्राप्ति के अपरम्परागत दृष्टिकोण का प्रतीक थी। इस सेना के निर्माण ने भारत की औपनिवेशिक जंजीरों को तोड़ने के लिए हर सम्भव रास्ता तलाशने, यहाँ तक कि ब्रिटेन के विरोधियों के साथ सहयोग करने की उनकी इच्छा को प्रदर्शित किया।

यह सेना बाद में भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) का हिस्सा बन गई। इसका नेतृत्व सुभाष चंद्र बोस ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध की सम्भावना में दृढ़ विश्वास के साथ किया। भारतीय राष्ट्रीय सेना बोस की प्रतिबद्धता और भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में पारम्परिक तरीकों से अलग सोचने की उनकी क्षमता का प्रमाण है।

करुणा की प्रतिध्वनि

बदलते भारत के अनसुने नायकों की सराहना

"मेरे प्यारे देशवासियो, नेक नीयत से निस्वार्थ भावना के साथ किए गए कामों की चर्चा दूर-सुदूर पहुँच ही जाती है, और हमारा 'मन की बात' तो इसका बहुत बड़ा प्लेटफॉर्म है। हमारे इतने विशाल देश में दूर-दराज में भी अगर कोई अच्छा काम कर रहा होता है, कर्तव्य भावना को सर्वोपरि रखता है, तो उसके प्रयासों को सामने लाने का ये बेहतरीन मंच है।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

माननीय प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' मंच के महत्त्व पर प्रकाश डाला, जहाँ देश के आम लोगों के निस्वार्थ कार्यों के लिए आभार व्यक्त किया जाता है और उनकी सराहना की जाती है जो पूरी लगन से मानवता की सेवा कर रहे हैं। इनमें शामिल हैं- अरुणाचल प्रदेश के दीपक नाबाम, जो बेघर और वंचितों के लिए लिविंग होम चलाते हैं; लक्षद्वीप की मूल निवासी नर्स हिंडुम्बी के., जो अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी जरूरतमंद लोगों की सेवा कर रही हैं और मिनिकॉय द्वीप के के.जी. मोहम्मद, जो प्रकृति तथा संस्कृति के संरक्षण के लिए लगातार काम कर रहे हैं।

"मुझे अपने सभी कामों में MDS (मलिकू डेवलपमेंट सोसाइटी) के साथियों, गाँव वालों और पारम्परिक मछुआरों से पूरा सहयोग मिला है। मैं अपने माननीय प्रधानमंत्री जी को उनके 'मन की बात' कार्यक्रम में मेरी प्रशंसा करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।"

-के.जी. मोहम्मद, पर्यावरणविद्, मिनिकॉय द्वीप, लक्षद्वीप

"अतीत में, लक्षद्वीप में बहुत सीमित सुविधाएँ थीं। कोई ऑपरेशन थियेटर नहीं था। सर्जरी और अन्य उपचार पेट्रोल लैम्प की रोशनी में किए जाते थे। मुझे डॉक्टरों के साथ काम करने और ऐसे ऑपरेशनों में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर मिला। चाहे कोई भी उपचार या चिकित्सा आपात स्थिति हो, हमें जागने और काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए, भले ही वह आधी रात हो।"

-हिन्डुम्बी के., नर्स, मूल निवासी - कवरत्ती द्वीप, लक्षद्वीप

"यह मेरी कल्पना से परे है कि हमारे देश के प्रधानमंत्री ने हमारे नाम का उल्लेख करके अपनी दिलचस्पी व्यक्त की और हमारे प्रयासों की सराहना की। यह सभी के लिए एक संदेश है कि प्रधानमंत्री कैसे समाज के वंचित और हाशिए पर पड़े वर्गों की गरिमा को महत्त्व देते हैं।"

-दीपक नाबाम, अध्यक्ष, दीपक नाबाम लिविंग होम, अरुणाचल प्रदेश

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Baijayant Jay Panda
@PandaJay

"संविधान सभा के सदस्यों के विचार, उनकी वाणी... हमारी बहुत बड़ी धरोहर है।"
सम्माननीय प्रधानमंत्री @narendramodi जी का आज का #MannKiBaat हर बार की तरह प्रेरणादायक और अत्यंत शिक्षाप्रद रहा। आज पटेल नगर विधानसभा में स्थानीय नेतृत्व व निवासियों के साथ #MannKiBaat कार्यक्रम सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित कर उनके योगदान की सराहना की गई।

Translate post

Devendra Fadnavis
@Dev_Fadnavis

'मन की बात' कार्यक्रमात, मा. पंतप्रधान नरेंद्र मोदीजी यांनी देशातील वेगाने वाढणाऱ्या स्टार्टअपवर भाष्य करताना सांगितले की, देशातील विविध शहरांसह महाराष्ट्रातील वाशिम शहर स्टार्टअपचे केंद्र बनत आहे.

'मन की बात' कार्यक्रम में मा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी इन्होंने देश में तेजी से बढ़ते स्टार्टअप कल्चर पर प्रकाश डालते हुए बताया कि देश के विभिन्न शहरों के साथ महाराष्ट्र का वाशिम शहर स्टार्टअप का सेंटर बन रहा है।

(मन की बात | 19-1-2025)
@narendramodi @mannkibaat
#MannKiBaat #Washim #Startup

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने आज अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में बेंगलुरु स्थित स्पेस स्टार्टअप पिक्सेल (Pixxel) की उल्लेखनीय उपलब्धियों की सराहना की। पिक्सेल ने हाल ही में देश के पहले निजी state constellation 'Firefly' के सफल अभियान के माध्यम से अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की साख को और मजबूत किया है, हम सभी को गौरवान्वित किया है। 'Firefly' मिशन न केवल भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं को सुदृढ़ करता है, बल्कि वैश्विक मंच पर हमारे नवाचार और तकनीकी नेतृत्व को भी उजागर करता है। यह स्टार्टअप 'आत्मनिर्भर भारत' की सच्ची तस्वीर पेश करता है और देश के युवाओं के लिए महान प्रेरणा है।

#MannKiBaat
Translate post

Kiren Rijiju
@KirenRijiju

अरुणाचल प्रदेश में दीपक नाबाम जी ने सेवा की अनूठी मिसाल पेश की है: माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat
Translate post

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

A while back Adarniya Shri @narendramodi ji spoke about the Hathibandhu initiative of Assam in his #MannKiBaat address.

The initiative is a natural solution to reduce man-elephant conflicts.

30 hectares of pvt land has been planted with napier grass in Nagaon & Karbi Anglong.

Rayhaan Pasha
@Rayhaanpasha

PM Modi Ji's unwavering support for tribal communities empowers us to preserve our heritage while creating economic opportunities. This GI recognition helps Nicobar's tribal people sustain livelihoods by sharing ancestral wisdom with the world.'Prince Rashid
#MannKiBaat #GiTagged

Nirmala Sitharaman
@nsitharaman

In his first #MannKiBaat for this year, 2025, @PMOIndia calls upon all of us to exercise our franchise each time, every time. PM @narendramodi observed that the @ECISVEEP is updating the electoral process using technology. He also congratulated the ECI on conducting our elections in an impartial way.

> **Narendra Modi** @narendramodi · Jan 19
> Highlighted how our collective spirit and proactive efforts by the Election Commission of India have made our democracy more vibrant. #MannKiBaat

Smriti Z Irani
@smritiirani

आज @PMSangrahalaya में आयोजित मन की बात क्विज के चौथे संस्करण समारोह का शुभारंभ एवं देश भर से आए विजेताओं के साथ संवाद किया।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी की #MannKiBaat ने राष्ट्रीय एकता और जनभागीदारी की भावना को अभूतपूर्व ऊंचाई पर पहुंचाया है। यह कार्यक्रम आज न केवल आम जनता की आवाज को मंच प्रदान करता है, बल्कि देश के युवाओं, किसानों, महिलाओं और समाज के हर वर्ग को प्रेरित करने का माध्यम भी है।

इस अवसर पर विजेताओं को आदरणीय @VMBJP जी का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

Translate post

Yogi Adityanath
@myogiadityanath

"प्राण-प्रतिष्ठा की ये द्वादशी, भारत की सांस्कृतिक चेतना की पुनः प्रतिष्ठा की द्वादशी है।"

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा आज @mannkibaat कार्यक्रम में दिया गया यह संदेश, हम सबको विकास के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित एवं संवर्धित करने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

इतिहास से सीखते हुए और संस्कृति को सहेजते हुए हम एक उज्ज्वल और समृद्ध भविष्य का निर्माण कर सकते हैं, श्री अयोध्या धाम में प्रभु श्री राम लला की प्राण-प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ इसी संदेश को आत्मसात करने का आह्वान करती है।

सनातन संस्कृति और मानव सभ्यता के गौरव से साक्षात्कार कराते 'पौष शुक्ल द्वादशी' के ऐतिहासिक दिवस का उल्लेख करने हेतु प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार!

Translate post

Hardeep Singh Puri
@HardeepSPuri

Netaji Subhas Chandra Bose Ji used radio as a powerful tool during India's freedom struggle against British Rule to unite Indians in our epic and undaunted fight for independence.

In the digital age, PM @narendramodi Ji has brought radio back into prominence through #MannKiBaat.
The medium of communication has been revived for meaningful conversations and national unity, much like how Netaji used it to connect and inspire people.

I remember in 2021, I was fortunate to visit 'Netaji Bhawan' the ancestral home of Netaji. Standing in the house of the founder of Azad Hind Fauj, a leader whose legacy continues to guide and inspire our nation even today, was a deeply moving experience.
Jai Hind!

Jyotiraditya M. Scindia
@JM_Scindia

ये हम सभी के लिए बहुत खुशी की बात है, कि बीते दो महीनों में, हमारे देश में दो नए Tiger Reserves जुड़े हैं।

#MannKiBaat
Translate post

महाकुंभ एकता, समता और समरसता का असाधारण संगम : मोदी

मन की बात : पीएम ने कहा-पूरे भारत को एक सूत्र में बांधना सिखाती है हजारों वर्ष पुरानी परंपरा

प्रतिष्ठा द्वादशी सांस्कृतिक चेतना की प्रतीक

स्टार्टअप्स का रजिस्ट्रेशन 200 फीसदी से अधिक

अंतरिक्ष क्षेत्र की उपलब्धियां देश को आत्मनिर्भर बना रहीं

In Mann Ki Baat, Modi praises makers of 'sacred' Constitution

HT Correspondent

Highlights from address

ON ELECTION COMMISSION
I would also like to thank the Election Commission, which has modernised and strengthened our voting process from time to time. The Commission has used the power of technology to give more power to the power of the people

ON MAHA KUMBH
This festival of Kumbh celebrates the festival of unity in diversity. People from all over India and the world congregate on the sands of the Sangam. There is no discrimination, no casteism anywhere in this tradition, which has been going on for thousands of yrs...

'Maha Kumbh a festival of unity in diversity'

प्रधानमंत्री ने मासिक रेडियो कार्यक्रम की 2025 की पहली कड़ी में विचार साझा किए

आयोग ने चुनाव प्रक्रिया को मजबूत बनाया : मोदी

मन की बात

इस बार का गणतंत्र दिवस विशेष

महाकुम्भ एकता, समता का असाधारण संगम

विरासत को सहेजना है

'स्टार्ट-अप इंडिया' बड़े शहरों तक सीमित नहीं

महाकुंभ, स्टार्टअप के अलावा बाबा साहेब, राजेंद्र प्रसाद जैसी हस्तियों का भी जिक्र किया

मोदी ने कहा, चुनाव आयोग ने तकनीक के इस्तेमाल से जन-शक्ति को मज़बूत किया

■ NBT रिपोर्ट

टाइगर रिजर्व का भी किया ज़िक्र

पीएम ने संविधान के अंश भी सुनाए

सुनाई असम के नौगांव की कहानी

विवेकानंद को भी किया नमन

Modi pats EC for its zeal to hold fair polls

PM pays tribute to makers of Constitution

YOJNA GUSAI | DC
NEW DELHI, JAN. 19

In his first Mann ki Baat broadcast of 2025, Prime Minister Narendra Modi on Sunday lauded the Election Commission for its commitment to fair elections and also urged Indians to use their vote to become part of and strengthen the democratic process.

The monthly broadcast was aired a week earlier as Republic Day falls on the last Sunday of the month.

During the broadcast, Modi also talked about the Constituent Assembly, the Ram Mandir anniversary and hailed the Maha Kumbh in Prayagraj as an "unforgettable sea of humanity, incredible visuals and an extraordinary confluence of equality and harmony". Praising the poll body ahead of its foundation day on January 25, observed as the National Voters' Day, the PM said the EC has used the power of technology to strengthen people's power. His comments came amid frequent criticism of the EC for its alleged pro-BJP bias.

"Our Constitution makers have accorded an important place to our EC in the Constitution and equally to people's participation in democracy. When the first elections were held in the country in 1951-52, some people were doubtful whether the country's democracy would survive. But our democracy proved all the apprehensions wrong — after all, India is the Mother of Democracy. In the past decades as well, the country's democracy has strengthened and prospered," said the PM as he lauded the poll body for modernising and strengthening the voting process from time to time.

THE FIRST anniversary of the Pran Pratishtha Parv of Ram Lalla in Ayodhya is the re-establishment of India's cultural consciousness. We should preserve the country's heritage while advancing on the path of development.

— NARENDRA MODI, Prime Minister

Pointing out that this year's Republic Day is special as it is the 75th anniversary of the Indian Republic, Modi said, "I salute all those great personalities of the Constituent Assembly, who gave us our sacred Constitution. During the Constituent Assembly, long deliberations were held on many subjects."

Hailing the Maha Kumbh as a festival celebrating unity in diversity, Modi said, "People from all over India and the world congregate on the sands of the Sangam. There is no discrimination, no casteism, anywhere in this tradition, which has been going on for thousands of years... People from the south of India, from the east and west of India, arrive here. The Kumbh event also tells us how our traditions bind the whole of India together. The ways of adhering to the beliefs are the same from north to south." He also pointed out that this month the first anniversary of the Ram Lalla pran pratishtha parv was celebrated on the day of Paush Shukla Dwadashi.

प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम की 118 वीं कड़ी में नवाचारों का किया जिक्र

अब स्टार्टअप कल्चर छोटे शहरों में भी आधे से ज्यादा का नेतृत्व बेटियां कर रहीं

प्रधानमंत्री ने नवाचार और बेहतर काम करने वालों को सराहा

देश के प्रमुख स्टार्टअप सेंटर के रूप में उभर रहा ग्वालियर

पीएम ने कहा कि भारतीय संस्कृति और विरासत आस-पास के पशु-पक्षियों के साथ स्नेह से रहना सिखाती है। देश में दो नए टाइगर रिजर्व की शुरुआत वनस्पति और जीव-जगत के संबंधों को अधिक समृद्ध करेगा।

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भोपाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम की 118 वीं कड़ी में मप्र में हाल ही में जुड़े रातापानी टाइगर रिजर्व का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति और विरासत आस-पास के पशु-पक्षियों के साथ स्नेह से रहना सिखाती है। देश में दो नए टाइगर रिजर्व की शुरुआत वनस्पति और जीव जगत के संबंधों को अधिक समृद्ध करेगा। प्रधानमंत्री ने भारत में बन रहे नए स्टार्टअप सेंटर्स के तहत देश के 7 शहरों में ग्वालियर का ▸▸ शेष पेज 5 पर

इसरो के सफल स्पेस डॉकिंग का किया जिक्र बेंगलुरु के स्टार्टअप की उपलब्धि भी बताई

हमारे वैज्ञानिकों ने सफलता हासिल की

मैं इस उपलब्धि के लिए 'पिक्सेल' की टीम, इसरो, और इन-स्पेस को पूरे देश की ओर से बधाई देता हूं। प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा कुछ दिन पहले हमारे वैज्ञानिकों ने स्पेस सेक्टर में ही एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की। हमारे वैज्ञानिकों ने सैटेलाइट की स्पेस डॉकिंग कराई है। जब अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट कनेक्ट किए जाते हैं, तो इस प्रक्रिया को स्पेस डॉकिंग कहते हैं। यह तकनीक अंतरिक्ष में स्पेस स्टेशन तक सप्लाई भेजने और क्रू मिशन के लिए अहम है। भारत इसमें सफलता हासिल करने वाला चौथा देश बना।

असम की 'हाथी बंधु' टीम के बारे में पीएम ने किया जिक्र

मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में कहा कि असम में एक जगह है 'नौगांव'। 'नौगांव' हमारे देश की महान विभूति श्रीमंत शंकरदेव जी का जन्म स्थान भी है। ये जगह बहुत ही सुंदर है। यहां हाथियों का भी एक बड़ा ठिकाना है। इस क्षेत्र में कई घटनाएं देखी जा रही थीं, जहां हाथियों के झुंड फसलों को बर्बाद कर देते थे, किसान परेशान रहते थे, जिससे आस-पास के करीब 100 गांवों के लोग, बहुत परेशान थे, लेकिन गांव वाले, हाथियों की भी मजबूरी समझते थे। मोदी ने आगे कहा कि गांव वालों ने इसका समाधान निकालने ▸▸ शेष पेज 5 पर

निर्वाचन आयोग ने निष्पक्षता के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई: मोदी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) :

● तकनीक की शक्ति का उपयोग करके लोकतंत्र को मजबूत किया : विपक्षी दलों के ईवीएम पर सवाल उठाने के बीच पीएम की टिप्पणी

दूरदृष्टि रखते है हमारे वैज्ञानिक

मन की बात • इस साल का पहला एपिसोड

स्टार्टअप कल्चर बड़े शहरों तक सीमित नहीं, इसमें छोटे भी: मोदी

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम में भारत में लगातार बढ़ रहे स्टार्टअप कल्चर की तारीफ की। उन्होंने कहा कि हाल ही में स्टार्टअप इंडिया के 9 साल पूरे हुए हैं। देश में जितने स्टार्टअप 9 साल में बने हैं, उनमें आधे से अधिक टियर-2 और टियर-3 शहरों से हैं। ऐसे में हमारा स्टार्टअप कल्चर केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं है। यही नहीं, छोटे शहरों के स्टार्टअप्स में आधे से ज्यादा का नेतृत्व हमारी बेटियां कर रही हैं।

निजी सैटेलाइट की लॉन्चिंग आत्मनिर्भरता में बड़ा कदम

अंतरिक्ष क्षेत्र की उपलब्धि का जिक्र करते हुए कहा कि स्टार्ट-अप पिक्सल ने भारत का पहला निजी सैटेलाइट 'फायरफ्लाई' लॉन्च किया है। यह उपलब्धि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक बड़ा कदम है। मोदी ने चुनाव आयोग की भी तारीफ की।

'मन की बात' में बोले प्रधानमंत्री

'स्टार्ट-अप इंडिया केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं'

नई दिल्ली, 19 जनवरी (ब्यूरो)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि स्टार्ट-अप इंडिया कार्यक्रम केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं है और आधे से अधिक स्टार्ट-अप दूसरी और तीसरी श्रेणी के शहरों से संचालित हो रहे हैं।

आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 118वीं और वर्ष 2025 की पहली कड़ी में अपने विचार साझा करते हुए प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि अपशिष्ट प्रबंधन, गैर-नवीकरणीय ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी और लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में बड़ी संख्या में स्टार्ट-अप देखने को मिले हैं। उन्होंने कहा कि अंबाला, हिसार, कांगड़ा, चेंगलपट्टु, बिलासपुर, ग्वालियर और वाशिम में कई स्टार्ट-अप काम कर रहे हैं और पिछले वर्ष नागालैंड में स्टार्ट-अप पंजीकरण में दो सौ फीसद से अधिक की वृद्धि हुई। कुछ दिन पहले स्टार्ट-अप इंडिया के नौ साल पूरे होने का उल्लेख करते हुए मोदी ने कहा कि हमारे देश में जितने स्टार्ट-अप नौ साल में बने हैं, उनमें से आधे से ज्यादा दूसरी और तीसरी श्रेणी के शहरों से हैं। जब यह सुनते हैं तो हर हिन्दुस्तानी का दिल खुश हो जाता है। यानि हमारी स्टार्ट-अप संस्कृति बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं है।

उन्होंने कहा कि आपको यह जानकर हैरानी होगी कि छोटे शहरों के स्टार्ट-अप में आधे से ज्यादा का नेतृत्व महिलाएं कर रही हैं।

साल की शुरुआत मे भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरिक्ष में भारत का पहला निजी उपग्रह समूह लांच किए जाने और दो उपग्रहों की सफल 'डॉकिंग' सहित विज्ञान के क्षेत्र में हासिल हालिया उपलब्धियों को गिनाते हुए रविवार को कहा कि ये साबित करता है कि भविष्य की चुनौतियों का समाधान देने के लिए देश के वैज्ञानिक और नवोन्मेषक कितनी दूरदृष्टि रखते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि साल 2025 की शुरुआत में ही भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं और उन्हें यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि अंतरिक्ष के क्षेत्र की एक भारतीय स्टार्टअप 'पिक्सेल' ने भारत का पहला निजी उपग्रह कांस्टेलेशन "फायर-फ्लाई" सफलतापूर्वक लांच किया है।

MANN KI BAAT

EC used tech to strengthen people's power, committed to fair polls: PM

आयोगामुळे लोकशाही बळकट

पंतप्रधान मोदींकडून 'मन की बात'मध्ये प्रशासनाचे कौतुक

ମୋଦୀଙ୍କ 'ମନ କି ବାତ'

ନିର୍ବାଚନ ଆୟୋଗ ଓ କୁମ୍ଭମେଳାକୁ ପ୍ରଶଂସା

Maha Kumbh celebration of unity, says PM, cites several other ongoing melas

PM Modi praises ECI for its commitment to fair polling

PM Modi praises startups from Ambala and Hisar

بیٹیاں چھوٹے شہروں میں اسٹارٹ اپ میں آدھے سے زیادہ کی قیادت کر رہی ہیں: مودی

अमर उजाला

PM Modi: महाकुंभ एकता, समता और समरसता का संगम; युवाओं के जुड़ने से स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित', पीएम मोदी बोले

daily Excelsior

'Mann Ki Baat' | This Republic Day Is Very Special, Says PM Modi

ETV भारत

'मन की बात' के 118वें एपिसोड में पीएम मोदी ने संविधानसभा से जुड़े महापुरुषों को नमन किया - PM MODI MANN KI BAAT

INDIA TV

PM Modi highlights Republic Day, National Voters' Day, Mahakumbh in 118th episode of Mann Ki Baat

The Indian EXPRESS

Mann Ki Baat: Modi lauds Election Commission's 'commitment to fair elections'

moneycontrol

Mann Ki Baat: महाकुंभ मेला पूरे भारत को एक सूत्र में बांधता है, यह दिव्य और अलौकिक है – पीएम मोदी

NEWS18 हिंदी

आज मुझे गर्व... मन की बात में पीएम मोदी ने स्पेस सेक्टर में हुए कामों को सराहा, देश के पहले प्राइवेट स्पेसशिप का किया जिक्र

NAI NEWS ARENA INDIA

PM Modi honours Netaji in Mann Ki Baat 118th episode

प्रभात खबर

118वीं मन की बात में पीएम मोदी ने कहा- यह गणतंत्र दिवस बहुत विशेष है

THE ECONOMIC TIMES

Mann Ki Baat: "Unforgettable crowd, unimaginable scene and extraordinary confluence...", says PM Modi on Maha Kumbh 2025

THE HINDU

'We need to keep our heritage intact': PM Modi in 118th Mann ki Baat

THE TIMES OF INDIA

PM Modi mentions IIT Madras research work in Mann ki Baat

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

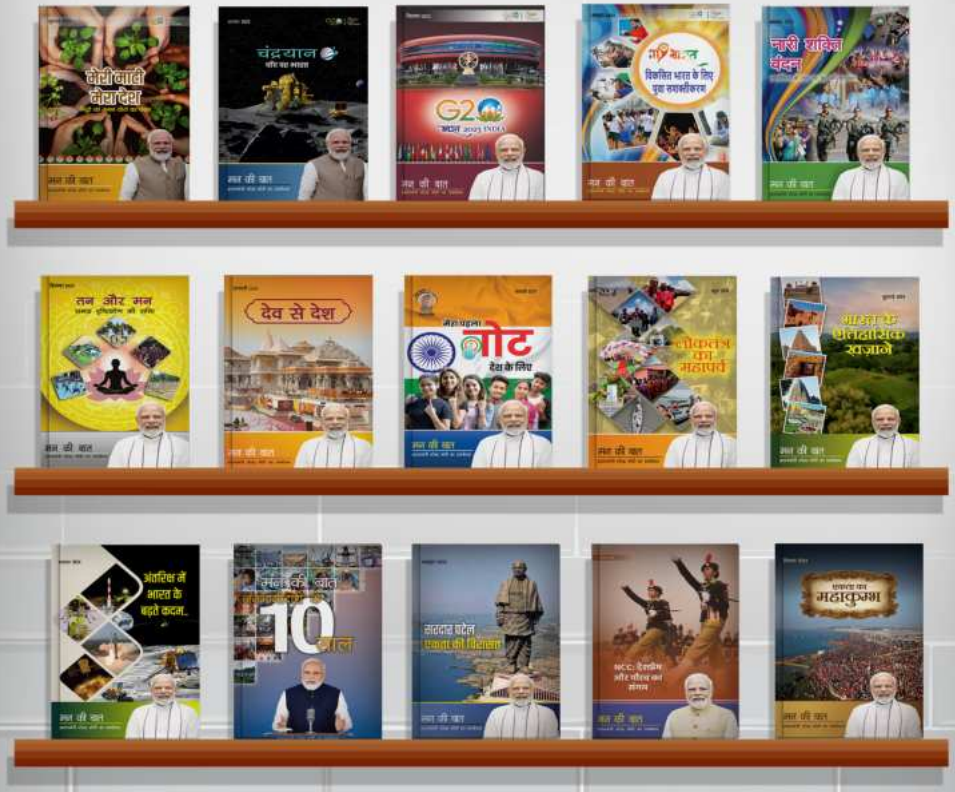

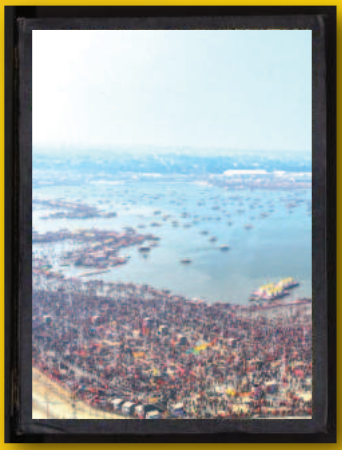

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार